यक्त्व किसी–मत में–भेषमें–किरियामें या ढोंग में नहीं है परन्तु-एक यथार्थ
श्रद्धानमें . जो जीवादि पदार्थोंका निश्चयिक व्यवहारिक द्रव्यादि सामाग्रीके प्राप्ति के
योग्य–यथार्थ (जैसाहै वैसाही) श्रद्धान (ज्ञान पने युक्त परिणीत) करतेहै वोही सच्चे स
सम्यक्त्वी कहलातेहैं. कि जिनोंकी आत्मा रागद्वेष विषय कषाय मत मतान्तरके झगडेसे
विरक्त हो कृष्ण नरेन्द्रवत एकांत गुण संग्रह मेंही तत्पर रहती हैं.

और "धनीपर धाडे पडतेहैं" इस कहवत मुजबही ऐसेजो सम्यक्त्व रत्न रूप महा नि
धानके धारक होतेहैं, उनके माल का हरण करने नाश करने विना कारणही मिथ्यात्वीयों प
यत्न करतेहैं. उनका सर्व स्वय हरण कर मरणान्तनक पहोंचा देतेहैं, परन्तु जिनोंने ऐहिक
सुख सामग्रीको क्षीण भंगूर विनश्वर जानलीहै, वो ऐसे परम सुखदायि सम्यक्त्वका नाश
करनातो दूर रहा परन्तु किंचित मात्र वट्टाभी नहीं लगने देतेहैं. इन गुणोंका हुबहु स्वरूप इ
स "सम्यक्त्वोत्सव" ग्रंथमें जयसेण विजयसेणके कथनकर दर्शाया गयाहै. इसके दो विभा-
गोंमें सेप्रथम भागमें तो पुण्य परतापके दर्शाने वाली धर्म मिश्रित कौतक रूप कथाकी क
थनीहै. और दुसरे भाग में-सम्यक्त्वी के लक्षण आचरण और उनको सम्यक्त्व धर्मसे च
लित करने मिथ्यात्वीयों कैसी योजना पर्यत्न करतेहैं, उससे सम्यक्त्वियों अपने प्राप्त र-

लित करने विश्वासोगा ...

...कथा मुक्ति में यत्न करते हैं. वगैरा विस्तार पूर्वक विचित्र रागों में कथ कर सम झाया गया है. पाठक गणों, श्रोता गणों, दत्त चित्त से निरन्तर इसका मनन पूर्वक पठन श्रवन कर, जिनको. सम्यक्त्वकी प्राप्ति न हुइ है वो प्राप्त करेंगे. जो सम्यक्त्वी हैं वो प्राप्त रख का यत्न करेंगे-विशुद्ध निर्मल सम्यक्त्व पदार्थ को रखकर परम नन्दी परम सुखी ब नेंगे ऐसा परम उपकार कर्ता इस रासको जानकर इसकी १००० प्रत यहांके ज्ञान वृद्धि खाते में-निम्न दर्शित महाशयोंका द्रव्य जमाथा उसके सद्व्यसे आजमेर-कान्फरन्स आफिसके सुखदेव सहाय जैन प्रि.प्रे. में छपवाया. और वहां काम विलम्बसे होता देख यहां इसका डीवाचा प्रस्तावना, शुद्धि पत्र वगैरा छपवाकर वाइडिंग करावाकर-सम्यक्त्वी भाइयोंको अमूल्य लाभ देता हुवा कृतज्ञता समझताहूं:—

रुपे.	सद्गृहस्थोंके नाम.	गाम.	जिल्हा.
+ ५०)—	भाइजी श्री टेकचंदजी मथुरामलजी-	नालछा	(धार-माल्वा) वाले.
१०)—	भाइजी श्री टेकचंदजी ज्ञानचंदजी-	दिगठाण	(धार-माल्वा) वाले.
५०)—	भाइजी श्री गुरदासमलजी नत्थुमलजी जैनीकी मारफत-	रोपड	(पंजाब) वाली पांच भाइयों.
२५)—	भाइजी श्री नवलमलजी सूरजमलजी घोका	यादगिरी	(हैद्राबाद)
२५)—	भाइजी श्री रूपचंदजी छगनीरामजी गंचेती	येजापुर	(हैद्राबाद)

श्रीजेयसण विजयसेण चरित्र का शुद्धिपत्र.

पाठक गणो ! प्रथम निम्न लिखित अशुद्धियों को शुद्धकर फिर यत्नासे पढीयेजीं

पृष्ठ.	ओली.	अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	ओली.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	४	यश	यशो	३४	१	वीन	तीन
३	१२	स्त्राम	स्राम	,,	५	मन	मान.
७	११	तोग	श्रेयस्कार	३५	५	कमरी	कुमरी
१५	१२	कथों	कथे	३६	५	पउड	पढ्ढ
२१	,,	ग्याउंयो	गेजो	,,	८	,,	,,
२४	६	आले	ओले	,,	९	कमरी	कुमरी
,,	११	गूझं	मुझ	३७	६	माधिक्क	मा धिक
२६	,,	अन लिष	अन्तलिव	,,	१२	ग्वोउ	ग्वोढ
२७	६	मा मी	कहांथी	४०	१	पाउ	पाढ
३१	४	मांउ	मांड	,,	,,	जानाउ	जमाइ
,,	१०	कोउ	कोड	४१	,,	सही।	सही॥१०॥
,,	११	होउ	होड	४३	५	यढती	ढली
३२	४	से	०	,,	१२	भार	भाइ

ॐ श्री परमात्मायनमः " श्री सम्यक्त्वोत्सव " जयसेणविजयसेण चरित्र प्रारंभ
॥ दोहा ॥ प्रणनुं जिनेश्वर जग गुरु । दाता सुद्धि बुद्धि धाम । ध्याता पाता निर्म-
ळ मन । थाता चिन्तित काम ॥ १ ॥ तीर्थेश्वर मुक्तेश्वरु । मुनिश्वर सुरी साध ।
प्रणनुं सिरांजली करी । वत्त अक्षय समाध ॥ २ ॥ पद्म पंकज गुरु राज पद । मुझ
मन भ्रमर लीन । कृपासिंधु विन्द बुद्धि दे । कीजो मुझ परवीन ॥ ३ ॥ संघेश्वर मु-
ख प्रगटी । वागेश्वरी कवी माय । तनुजपर सुनजर कर । दो श्रुति सुखदाय ॥ ४ ॥
सर्व जेष्ठ आश्रय गृही । धरी मन हुल्लास । सम्यक्त्वोत्सव का रचुं । शभा मनोहर
रास ॥ ५ ॥ समकिती २ वहु कहे । सम्यक्त्व अति दुर्लभ । जो पामी शुद्ध पाल
ही । तास शिव सुख सुलभ ॥ ६ ॥ धर्म मूल सम्यक्त्व हे । महा लाभ दातार । सम्यक्त्व
विन क्रिया निष्फल । मींगणी पर खांड मार ॥ ७ ॥ विमल सम्यक्त्वी विजय नृप
। जैनागमे तला लीन । संकटे सुमेरु ज्यों स्थिर रहे । शुद्ध तत्वार्थ चीन ॥ ८ ॥
तास तणी सुकथा यह । श्रोता सुणो स्थिर चित । गुण ग्रही वर्ता तदा । पावो

इच्छित हित ॥ १ ॥ ढाल १ जी । आदर्शन जोन्या जी । ये दर्श ॥ मर्मा कन शु
द्ध पालोजी । मम आप दर निवार । मम० जी वांछित सुख दातार । मम ॥ टेर ॥
लख जोयण मान प्रमाण यह । जम्बु नाम लघु द्वीप ॥ शोभ क्षेत्र गीरि नदी मे ।
थणादी देव महाप । मम ॥ १ ॥ भरत क्षेत्र कम भर्मी को है । पांच सौ जोयण मांय ।
छब्बीस ऊपर छ कला मे । पट खण्ड मे दीपाय । मम ॥ २ ॥ साढे पच्चीस देश आर्य
मे है । सोवीर देश सुखकार । नन्दीपुर नगर शिरोमणी है । विद्यानन्द दातार ॥
मम ॥ ३ ॥ गढ महल मन्दिर घरा मे । शोभे स्वर्ग समान । धन धान्य आदि पूर्ण
भरी । सदा वरते कल्यान । मम ॥ ४ ॥ स्वचक्री परचक्री को जी । डर नही
तहा लगार । चोर जार अन्यायी जोनां । मिले न नगर मझार । मम ॥ ५ ॥ दुर्भिक्ष
दुकाल उस शहर मे जी । दूर रहे सदा काल । धर्म पुण्य विद्या वली जी । वसे है
नर खुश हाल । मम ॥ ६ ॥ धर्म सिंह नाम नृपति जी । रूप तेज इन्द्र समान ।
न्याय नीति धर्मी गुणी । और तीव्र को भान । मम ॥ ७ ॥ पुत्र परे पाले परजा

भणी। पोषे दे विद्या नीति क्षेम। चोर अन्यायी दुष्ट को सो। हरण करी ले प्रेम। सम ॥ ८ ॥ मस्तूकार प्रसार के। पोषे अनाथ अपंग ने बाल। संपादित सत्र प्रेम को। कियो निज शुभ गुण नृपाल। सम ॥ ९ ॥ श्री कान्ता श्री दत्ता श्रीमति। यह तीनों है पटनार। रूप कला शील विनय दया में। वश हुवा नृप परिचार॥ सम ॥१०॥ श्री कान्ता श्री दत्ता एकदा जी। सूती सुख सेजा मांय। शार्दूलसिंह स्वपने लख्यो। शीघ्र जागृत होइ हर्षाय। सम ॥११॥ उभय २ राणी एकी समय जी। भूप को आइ जणाय। हर्षानंदे वदे राजवी। अब उणार्थ पूर्ण थाय। सम ॥ १२ ॥ पुत्र प्रसव सो सिंह समा। कुल केतू दिन कर आधार। अंजली युत राणी कहे। येही इच्छा पडो वाक्य पार। सम ॥ १३ ॥ ले आज्ञा निज स्थाने गइ जी। धर्म जागरणा कीन। प्राते शभा सजाय के। नृप पण्डित वोलाये प्रवीन। सम॥ १४ ॥ पूछा अर्थ स्वमा तणा। ते शास्त्र जो करे उचार। तीस ३० उत्तम बेंचाली ४२ अधम। बहोत्तर स्वमा शास्त्र मझार। सम ॥ १५ ॥ अत्युत्तम चउदह स्वप्न देखे। तीर्थंकर की मात। सात ना-

गयण गम चार । एक मांडलिक माता पान । मम ॥ १६ ॥ चतुष्पद नृप सिंह शार्दुल । तेम नराधिप नन्दन होय। शूरवीर अर्गा गजना। सज्जन धर्मी मन मोय॥ । मम ॥ १७ ॥ इत्यादिक कहे महीपति। विज्ञानी वयण प्रमाण । पीडियां लग स्था-इ न खुटे । दी आजीविका गजान । मम ॥ १८ ॥ खुशी हुई पगिडत गया । नृप राणी को अर्थ जणाय । गर्भपाले दोष टालती । रहा नित्यानन्द वृनाय। मम ॥ १६ ॥ गर्भ पुण्यातम पसाय से। राज लक्ष्मी वृद्धि पाय । तीन मास यों वीतीया । पुरय शुभ डोहला प्रगटाय । मम ॥ २० ॥ पुरुष वेश शस्त्र सजी । करी सेना संग परिवार। क्रीड़ा करू वनने विषे। गरमी अरगति धरे ने वार । मम ॥ २१ ॥ अंग रक्षक दासी धरी । नृप जाणा डोहला का भेद । दी आज्ञा शीघ्र पूरिये । जो उपनी मन उम्मेद । मम॥ २२ ॥ डोहला पूर्या हर्ष्या सहू । जाण्या उदर मे पुण्य हाल । श्रीप अमोल समकिती त्यवे । ये पभणी पहिली ढाल । मम॥ २३ ॥ दुहा ॥ सु-पात्र नित्य पोषती। दे चउदह (१४) प्रकारे दान। धर्मोन्नती करती सदा । धर्मात्मा को

सन्मान ॥ १ ॥ सवा नव मास यों वीतीया । शुभ लग्न प्रसंग । जन्म्या दोनों राणी तव । कुंवरजी वरत्या रंग ॥२॥ जन्मोत्सव उमंगे कियो । छोड्या वंदीवान । दुःखी दारिद्री तोषिया । देइ वांछित दान ॥ ३ ॥ सज्जन परजन पोष के । गुण निष्पन्न दीयो नाम । जयसेण विजयसेणए । नाम समा परिणाम ॥ ४ ॥ उज्वल पक्ष के चन्द्र ज्यों । वढे बुद्धि वल रूप । दृढ धर्मी वय बाल से । देखी अचंभे भूप ॥ ५ ॥ मानो भव पूर्व ही थकी । लाय सम्यक्त्व लार । सु गुरु देव धर्म ज्ञान पे । राखे अति ही प्यार ॥ ६ ॥ न्याय नीति पे प्रीति अति । पाखंड से रहे दूर । पढे कला सर्व शीघ्र ही । हुवे शुभ गुण भरपूर ॥ ७ ॥ जोड़ हरी हलधर समी । खोड न दिसे लगार । मोहनगारा सर्व को । करत सदा चैन चार ॥ ८ ॥ होनहार होयो रहे । कर्म गति है विचित्र । सो सुणिये भव्य दत्त चित्त । वरणुं आगे चरित्र ॥ ९ ॥ ढाल २ री । वीरजी वखाणी हो मुनिश्वर करणी आपरी ॥ यह देशी ॥ ईर्षे छोड़ो हो जोड़ो प्रीति मग्न मे । ईर्षे मे हानी अनेक । सम्य वहां जम्ज हो

हुवा तेम ॥ हर्ष ॥ ८ ॥ परिजन जीमाड़ हो स्थापे नामने । गुण निष्पन्न 'न्याय-
मेण' ॥ चंपकलता हो सुक्र शशी परे । वृद्धि होवे हर्ष मेण ॥ हर्ष ॥ ६ ॥ विद्यालय में
हो पढाड़ सर्वी कला । धर्म ज्ञान सत्संग ॥ प्रवीन भया सो हो स्वल्प ही कालमें ।
करे क्रिडा उछरंग ॥ हर्ष ॥ १० ॥ जय विजयने हो साथ रमे सदा । लघु जाणी ते
धरे प्रेम ॥ परन्तु पुण्याई हो जुदी २ नरतणी । पावे उतनो ही खेम ॥ हर्ष ॥ ११ ॥
जय विजय का हो पुण्य प्रथम्न ध्यति । ते लगे दाग समान ॥ देखी श्रिमति हो
चित्त में प्रजाले । धार्त रौद्र ध्यावे ध्यान ॥ हर्ष ॥ १२ ॥ राजाधिपती हो होसी
दोनों नन्दुवा । मुक्त पुत्र जन्म दुःख पाय ॥ कोइ उपाये हो हणावुं दोनों भणी ।
तो मुक्त पुत्र सुखी थाय ॥ हर्ष ॥ १३ ॥ छल छिद्र बहु चिंत हो देखे दोड़का । करे
केइ मारण उपाय ॥ पुण्य बली जह ध्हो जय विजय घणा । लागे नहीं एकी
दाव ॥ हर्ष ॥ १४ ॥ चिन्तातुरी हो हुई श्रीमति घणी । अन्नोदक नहीं भाय ॥
निद्रा रोशाणी हो खिशाणी सदा रहे । नयने नीर वहाय ॥ हर्ष ॥ १५ ॥ एकदा

शाह हो एक आगणी निरा । नाएन विन्या अनक ॥ श्रीमान रम्या रा रम्या
चित नरित्राण । बाल मा परनी विवध ॥ इप ॥ १६ ॥ विन्या वरने रा आगा
मे आपक । चित म निन्ता है पृष ॥ मा प्रकाशा हा महार मम्मृम । हम निम
में दुःख दूर ॥ इप ॥ १७ ॥ इन्द्रवश आम हा राक रखा कम । हम निम शत्रु
का प्राण ॥ मत्य मखी माना हा कहनी माहरा । कह तुम कह्या प्रमाण ॥ इप ॥
॥ १८ ॥ निशक हाइ हा कहो मुझ मन नणा । तुम हम बोन भगवान ॥ तुम
दुःख देखी हो मुझ मन दुःख धरे । दो है निगथा जवान ॥ इप ॥ १६ ॥ गुणी-
जन तुमसा हो मिलीया हम भणी । नवहो कहो मन वान ॥ प्रभा न रखा हो
हम जगमें कोइ की । इस राणी ने प्रचान ॥ इप ॥ २० ॥ इच्छित मिलीया हो
राणी ने आपने । ढाल दूसरा माय ॥ ऋषि अमोल कहो पुण्य प्रतापसे । वि-
घन सभी विरलाय ॥ इप ॥ २१ ॥ दोहा ॥ श्रीमति हर्षी अति । सुणी जोगण
ना वेण । क्षुधित भोजन लइ हुवे । त्यों फूल्या राणी नेण ॥ १ ॥ करामातण

जोगण भणी । जाणी अति होंश्यार ॥ भाग्ये आइ माहेरे । हिवे चिंतित करुं पार ॥ २ ॥ सन्मानी घणी जोगणी । आसन ऊंच वेठाय । अन्न वसन इच्छित देइ । साता तस उपजाय ॥ ३ ॥ नरमी कहे थे ज्ञानी हो । जाणयो म्हारो दुःख ॥ जिम बोल्या तिमही करी । अर्पो मुझने सुख ॥ ४ ॥ दुःख सब दाख्यो मन तणो । सुणी जोगणी हर्षाय ॥ किंचित फिकर न कीजिये । यह तो सहज उपाय ॥ ५ ॥ ढाल २ री ॥ वीर नृपति अन्यदा समय ॥ ये देशी ॥ श्रीमति हर्षित हुई । जाणी जोगण करामात ॥ हो भाइ ॥ जोगण पण हर्षित हुइ । जन्म को आश्रय चहात ॥ हो भाइ श्री ॥ १ ॥ कहे राणीजी देखिये । थोड़ा ही दिन के मांय ॥ हो बाइ ॥ मारुं दोनों बन्धवा । करुं में गुप्त उपाय ॥ हो भाइ श्री ॥ २ ॥ एकान्त जाय एवा भणी । दीनी तस सुखकार ॥ हो भाइ ॥ और सामग्री सब दीवी । विद्या साधन तोय हो भाई । श्री ॥ ३ ॥ जोगणी आराधन जोगण कयों देवी प्रत्यक्ष होय हो भाई । कयों चितारी मुझ भणी । कहे

कार्य तुम गाय हो वाई । श्री ॥ ४ ॥ नमन करी कर जोड़ के । जोगण करे अ-
रदास हो माई । मुझ मित्राणी श्रीमति तणी । पूरो शीघ्र तुम आस हो माई ।
श्री ॥ ५ ॥ राजेश्वर मन फेरी करी । जय विजय की घात कराय हो माई । राज
मिले न्यायमेण ने । ऐसो करो उपाय हो माई । श्री ॥ ६ ॥ ज्वाला भणे इण
कार्य मे । श्रीमति दुःख पाय हो बाई । कुमर दोनों महा पुरायवन्त हैं । मार्या कि-
मपी न जाय हो बाई । श्री ॥ ७ ॥ दुख सुख रूप तम होवसी । तोपण राखण
तुझ मन हो बाई । उपाय रचूं ऐसो हिवे । होय श्रीमति चिन्तन हो बाई । श्री ॥
८ ॥ इम पभणी सुरी गई । जोगण राणी पास आय हो भाई । कहे चिन्तित
होसी तुम तणो । सिद्ध हुवो कियो उपाय हो बाई । श्री ॥ ६ ॥ दोनों हर्षी सुखे
रहे । राते सुरी स्वप्न मांय हो भाई । कहे नृप को सावध हुवो । ध्याने धरो मुझ
वाय हो भाई । श्री ॥ १० ॥ मैं कुलदेवी तुम तणी । चाहूं कुल को खेम हो
भाई । या योग होतव जाणुं कोइ । तो चेताउं धर प्रेम हो भाई । श्री ॥ ११ ॥

जग विजय शुभ तनुज दो। होशी तुमको दुःख कार हो भाई । तिण कारण दोनों भर्गा । शीघ्र न्हगाओ मार हो भाई । श्री ॥ १२ वैरी ग्रोर ग्थार्था थंकूर मे । करनो ततिखण नाश हो भाई । तो ग्रागल वंध नहीं । यह नीति वचन विमास हो भाई । श्री ॥ १३ ॥ गत्य वात ये मान जे । करजे जो हित चहाय हो भाई। नहीं वश फिर है माहरो । यो कही देवी जाय हो भाई । श्री ॥ १४ ॥ जाग्या नव दो भूपति । चिन्ता ग्थार्थी ग्रपार हो भाई। ग्रसंभव बात कैसे बणे । देव मिथ्या न करे उचार हो भाई । श्री ॥ १५ ॥ कहे श्रीमति ने जगाय ने । स्वप्न तणो विरतंत हो भाई । श्रीमति कहे सुण ने यदा । ये ही स्वप्न ग्रायंत हो राजा । श्री ॥ १६ ॥ नृप कहे ग्रसंभव वात ये । दोनों कुंवर विनयवंत हो राणी । कुल भूषण दूषण विना । किम सुफ दुःख करंत हो राणी । श्री ॥ १७ ॥ राणी कहे ग्रहो नाथ जी । लोभ पाप को बाप हो राजा । होती ग्राई ग्रनादि से । जाणो छो शास्त्र ने ग्राप हो राजा । श्री ॥ १८ ॥ स्नेह सगपण लोभी न गिणे । राज

लक्ष्मी के काज हो राजा । केई मर्या मरसी केई । जो गफलत में रह्या हो राजा । श्री ॥ १९ ॥ सन्देह नहीं अम्बा वयण में । चेता गई हित काम हो राजा । कालिज मुझ धूजी रह्यो । कुशल रह्यो अहो राम हो राजा । श्री ॥ २० ॥ सावध रहजो नाथजी । करो योग्य शीघ्र उपाय हो राज । तृतिय ढाल अमोलक भणी । राणी का चिन्तित थाय हो भाई । श्री ॥ २१ ॥ दोहा ॥ राणी सुरी का वयण सुण । नृपति अति विस्माय । कृत्य भूपण मुझ नानड्या । किण विध मार्या जाय । ॥ १ ॥ विष वृक्ष हाथे लगाविया । ते छिण नहीं कटाय। कल्प वृक्ष मम तनुज दो । तिन सुन्हे किम मराय ॥ २ ॥ जन्म से आज दिवस लगे क्यों न कोई अन्याय । आण न उल्लंघी माहरी । ते किम होवे दुःख दाय। ३ ॥ कदा राणी मोक स्यार मे । बोले मिथ्या वेण । पण देवी क्यों मिथ्या लवे । आश्चर्य अधिक एकेण ॥ ४ ॥ यों चिन्ता सागर विषे । राय गोता रह्या खाय । खाड कूप के मध्य रह्या । सुझे ना कोई उपाय ॥ ५ ॥ ढाल ४ थी ॥ चैदरबी मे

अति साइया। दोनों कुमर तत्काल हो लाल। जिम आजही गमया जावना। हुवा फांइ हवाल हो लाल ॥ उ॰ ॥ ८ ॥ आपण जाण अजाण मे। कीनो नहीं को कसूर हो लाल। विना गुन्हे आज अपमान। तर्णात गम्या दूर हो लाल ॥ उ॰ ॥ ९ ॥ अपमान स्थान चौण एकहो। रहणा जुगतो नाय हो लाल ॥ पुण्यें आया राजकुल विषे। आगे भी पुण्य मग आय हो लाल ॥ उ॰ ॥ १० ॥ अटन किया अन्य देश में। भाग्य परिचा होय हो लाल। चातुरी बल बुद्धि वदे। यो निन्तव ते दोय हो लाल ॥ उ॰ ॥ ११ ॥ परवश पण इहां रहवो। यह तो मोटो दुःख हो लाल। परदेशे फिर आपण हिवा। भोगो स्वेच्छा को सुख हो लाल ॥ उ॰ ॥ १२ ॥ निशरम अपमान मही करो। पडचा रहे नहीं ठाम हो लाल। निति वचन ए हृदे धरो। सुख तजी लहे आराम हो लाल ॥ उ ॥ १३ ॥ ॐ श्लोक ॥ त्रय स्थान न मुच्यंते। काका का पुरुषा मृगा। अपमान त्रयो यांति। सिंह सत्पुरुषा गजाः ॥ १ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ इम सोची साहस धरी। आया महल के द्वार हो लाल।

साक्य करण पिता भणी। श्लोक रचा तेही वार हो लाल ॥ उ० ॥ १४ ॥ ❀
॥ श्लोक ॥ तुलऽवलेय सहमे पृथेवं। समं प्रमाणं निखिलान येहम। गुरुत्व धस्ताद
गुरून दुग्धान। करोप्यशेषान कुहूदपलमात्र ॥ १ ॥ रत्नानि रत्ना करमां वमंस्या।
महांमि भीर्यद्यपि ते वहुनी। हानिस्तवे वेह गुणेस्त्विमानी। भाविन भूवल्लभ मौलि
भांजी ॥ २ ॥ न चैव दोषस्त्व किन्तु कस्या। प्यन्यस्य यः चोभ करस्तवापि। गु-
णोधवाऽयं कथमन्य थास्ति। तेषां गुणेः स्वेर्महिम प्रवृति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ अस्यार्थ
ढाल ॥ अहो ताकडी मकर मानतुं। में करूं सव का तोल हो लाल। ऊंच नीच
नी खवर नहीं। तिणथी तुम्ह होसी मोल हो लाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ रत्नाकर रत्न
करंड को। मत कर मन अभिमान हो लाल। वे रत्न रूठा जो तुम्ह थकी। तो
तुंही सहसे अपमान हो लाल ॥ उ० ॥ १६ ॥ पण दोष नहीं यह तुम्ह तणो।
चहाडिये कीनो चोभ हो लाल ॥ गुणी गुण सर्व स्थान पामसी। वधे रत्न की
शोभ हो लाल ॥ उ० ॥ १७ ॥ यों कथो तीनों श्लोक को। पत्र चेंटायो द्वार हो

लाल ॥ सुरत्न धरमिंह मारग्या । चले दोनों कुमार हो लाल ॥ उ० ॥ १८ ॥ शकुन श्रेयकार तव भया । ऋद्धि सिद्धी दातार हो लाल ॥ समझा हर्षाया घणा । सीख्या कला के मझार हो लाल ॥ उ० ॥ १६ ॥ निश्चयवादी क्षत्रि कुली । उर सोच नहीं को लगार हो लाल ॥ विश्राम्या सुशकुन मे । चलिया उत्सहा अपार हो लाल ॥ उ ॥ २० ॥ पुण्यात्म पग ने पगले । पावे सुख विशाल हो लाल । ऋषि अमोल ने यह कही । रसीली चौथी ढाल हो लाल ॥ उ० ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ जायान्तर नरपति तदा । संभार्या कुमार । बोलाया मिलिया नहीं । तव भय पायो अपार ॥ १ ॥ रखे किहां हो गुप्त रहा । कर अचिन्ती घात । ढूंढावे अति खंत से । द्वारपाल तव आत ॥ २ ॥ द्वार पत्र जे लगावियो । कहा सहु समाचार । नृप सामंत साथे लही । तत्त्विण आया द्वार ॥ ३ ॥ पढ़िया श्लोक तिहूं प्रकट तहां । अर्थ समझा सव भूप । परमंस्य खुल्ले सुखे । दाहा बुद्धि अनूप ॥ ४ ॥ चिन्ते नृपति श्रेय भयो । सहजे टलियो पाप ।

मैं भी यहां निश्चिन्त रहूं । तेभी न पाया त्रास ॥ ५ ॥ दोनों कुमर की मात सुण । दुःख ते पाइ अपार । श्रीमति हर्षि घणी । करण पुत्र सिरदार ॥ ६ ॥ चिन्तित न हुवे कोइ को । होवे जो होण हार । श्रोताजन आगल सुणो । जय विजय अधिकार ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ढाल ५ मी ॥ वालुडा तूं संग न जाजेरे । पाछो घर वेगो आजेरे ॥ यह चाल ॥ पुण्य फल भव्य जन जोजो जी । पुण्य करवा उत्सुक होजो जी ॥ टेर ॥ जिम २ कुमर आगल वधे । तिम २ शकुन श्रेय थाय । चिन्ते इण वन ने विषे । महा लाभ मिले किस्यो आय ॥ पु० ॥ १ ॥ आगल विषम रम्य वन में । शीघ्र जावे देखत विनोद । मध्याने क्षुधित भया । लियो विश्राम धरी प्रमोद ॥ पुण्य ॥ २ ॥ मिष्ट निरोग फल भोगव्या । पीयो शीतल झरणा को नीर । वात बनावे प्रेम की । बैठा तरु तल दोनों वीर ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ दुपट्टो बीछाइयो । भुज उसीस्यो तल देय । थाक प्रमाद निवारने । तहां भूमी पे सूता तेय ॥ पुण्य ॥ ४ ॥ जैसे चक्र आइ पडे । सुज्ञा होवे उसी प्रमाण । खेद न

वंदे चित्त में । फल येही पाया विज्ञान ॥ पुराय ॥ ५ ॥ लघु बन्धव निद्रित भया जी । जेष्ट श्रांय निश्चिन्त । जय जी पड़े विचार में । पूर्व पश्चात केइ चिन्तित ॥ पुराय ॥ ६ ॥ नहीं ज वट ना वृक्ष पे जी । यक्ष युगल सुखे रेय । देखी दोनों पुरायात्म को । यक्षणी कर जोडी केय ॥ पु० ॥ ७ ॥ प्राणेश आज अपने घरे । हुवा प्राहुणा राज कुमार । ज्ञानी गुणी धर्मात्मा । योग्य करो यांरो सत्कार ॥ पु० ॥ ८ ॥ यक्ष कहे सुगुणी प्रिया । चक्र भर्ली चेताइ मोय । घर आया मा जाया सारीखा । हूं तोषु हिवणा दोय ॥ पु० ॥ ९ ॥ त्रिजगे मिलणी दोहली । तीनों वस्तु है मुझ पास । ते इनके अर्पण करो । हूं तो पूरुं महारी आस ॥ पु० ॥ १० ॥ हर्षी दम्पति मानव रूपे । प्रकटे जयजी ने पास । नमन कियो प्रेमातुरा । नरभी ने करे अरदास ॥ पु० ॥ ११ ॥ भले पधार्या प्राहुणा । आज पवित्र आंगण कीध । हम जंगली भक्तिमी करां । तुम मुक्ता हो राज रिध ॥ पु० ॥ १२ ॥ अमूल्य वस्तु त्रिहूं मुझ कने । कृपा करी करो अंगीकार । आप जैसा पुरायात्म के

जोगी । हे जी करसो उपकार ॥ पु० ॥ १३ ॥ प्रथम मंत्र यह लीजिये । कीजिये सात दिन जाप । अष्टमें दिने निश्चय पावसो । महा राज्य ऋद्धि अमाप ॥ पु० ॥ १४ ॥ दूसरी मणी यह अमूल्य छे । इसे रखे जब मुख मझार । रूप होवे धारे जिसो । उड जावे गगन मझार ॥ पु० ॥ १५ ॥ पखाली पाणी पावतां । स्थावर जंगम विष करे दूर । सामग्री युत भोजन दे सहू । वली इच्छित ऋद्धि पूर ॥ पु० ॥ १६ ॥ तीसरी जडी महा औषधी यह । जो होवे शास्त्र अग्नि घाव । पशुदंश व्यन्तर दुःख ने । हरे लगायां अटल उपाव ॥ पु० ॥ १७ ॥ यह थोड़ी सेवा मा-हेरी । बहु जाणी करो अंगीकार ॥ कुँवर अचिन्त महालाभ जो । हियड़े हर्ष अपार ॥ पु० ॥ १८ ॥ आग्रह सत्कारे ते गृही । सन्मान्यो जुगल ने अपार ॥ पर संसी भक्ति घणी । वली मान्यों मोढ उपकार ॥ पु० ॥ १६ ॥ हर्षित हुवा दोनों घणा जी । सुणी कुमर ना वचन । नमी गया निज स्थानके । अर्पी ने तिहुं रतन ॥ पु० ॥ २० ॥ यों पुण्य के प्रभाव से । अल्प दुःखे पावे मह। सुख ।

होवे यह शास्त्र की नीति ॥ देखो० ॥ २ ॥ अति नम्र हो मिष्ट वयण से । यों करता विनंति । पिता सम जेष्ट राज योग्य तुम । अनादि यह रीति ॥ देखो० ॥ ३ ॥ मैं तुम सन्मुख सेवक सो रहूं । ज्यों लक्ष्मण सीतापति । इसीलिये विद्या यह आप सिद्धकर । होवो भू इन्द्रपति ॥ देखो० ॥ ४ ॥ जय कुमर लघु बन्धव तांइ । वांछे करण भूपति । बोले तूं किम् नहीं राज जोगो । न बोली जे अघटति ॥ देखो० ॥ ५ ॥ अपन दोनों राज योग्य हां । लक्षण गुण आकृति । दोनों मिल सिद्धकरां यह विद्या । रहकर एक यति ॥ देखो० ॥ ६ ॥ विजय वचन प्रमाण करी ये । बैठा जपनठिति । लघु बन्धव के विश्वास काजे । जय करे ढोंग रीति ॥ देखो० ॥ ७ ॥ मन्त्र जाप तो न करे किंचित । मुख हिलावे निति । देखो प्रेम जेष्ट बन्धव का । निर्लोभी ज्यों जति ॥ देखो० ॥ ८ ॥ तात ज्यों भ्रात की आज्ञा पालन । विजय सदा स्थिरचिति । यथा विधि साधे साविद्या । देखो लघुत्व की नीति ॥ देखो० ॥ ९ ॥ पग फिरए क्यों परिश्रम कीजिये । जो है वस्तु क्षति ।

सुख सवाया । गज विजय पुण्य पर ग्रायारे लो ॥ सूंड में गोरी कुंभ स्थले बैठाया । उंच उंचो पद पायारे लो ॥ पुण्या० ॥ १ ॥ कुसुम वृष्टि सुर करी कुमर पर । गज भूषण सजायारे लो । प्रत्यक्ष देव प्रभाव यह स्व के । सज्जन मन हर्षायारेलो ॥ पु० ॥ २ ॥ पुण्य योग्य जाणी विनय ते । जय २ शब्द वरायारे लो । पंच शब्द वाजित्र वाजे । बिरुदा वली बोलायारे लो ॥ पु० ॥ ३ ॥ रूप तेज बल आकृति निहाली । नम्या सामंत भूपालोरेलो । हर्षा प्रजा मुख चढीलाली । मांगी चिन्ता कंकालोरे लो ॥ पु० ॥ ४ ॥ आकाश में बोले देव वाणी । यह छे उत्तम प्राणी लो । सहूजन पाले जो राहनी आणा । जो चावो सुख स्वाणीरे लो ॥ पु० ॥ ५ ॥ यों गुण अरिजन त्रास जो पाया । नमीया तत्क्षीण पायारे लो । पुरेन्द्र सम प्रताप जग्यो तस । महले चालण सज थायारे लो ॥ पु० ॥ ६ ॥ तब कहे विजय सब धैर्य धरीये । एक सहारी कही करियेरे लो । मुझ जेष्ट बन्धव गुण गण दरिये । तास हुकमें अनुसरी येरेलो ॥ पु० ॥

॥ ७ ॥ सो इहां छे बाग के मांही । लावो सरकारी बोलाइरेलो । तस देवो तुम तख़्त बैठाइ । होसी महुने सुखदाइरे लो ॥ पु० ॥ ८ ॥ यों सुनकर सब आश्चर्य पाये । अहो निर्लोभ विनीत सवायारे लो । प्रधानादि बाग में आया । पण जय जी तस नहीं पायारे लो ॥ पु० ॥ ९ ॥ तब मन्त्रीयादि कर जोड बोले । आपही रत्न अमोलेरे लो । देव हमने न्हास्या आप खोले । पालो पोषो राज आलेरे लो ॥ पु० ॥ १० ॥ आप पुन्य आप संपत पाया । सो तो बीजा थी नहीं विलसायारे लो । बडा भ्रात कोइ स्थान न पाया । अन्य स्थान सीधायारे लो ॥ पु० ॥ ११ ॥ तब विजयजी चमक्या चित्त मांइ । दिन ममम जाणयाइरे लो । इणही काज भाइ दियो मुझ पठाइ । आप तो दूरा गयाइरे लो ॥ पु० ॥ १२ ॥ होणहार सो निश्चय थावे । अब भाइ किण विध पावेरे लो । ते तो गगन भमें मणी प्रभावे । मुझ दृष्टिए कैसे आवेरे लो पु० ॥ १३ ॥ यों फिकर करता राज में आया । सब जन मिल गादी बैठायारे लो । पहिला नृप की दहन क्रिया करी ! जग व्यवहार

नहीं मिलण को । रखे न्हाखे फंद मांय । विदेश कौतक देखन की । इच्छा निष्फल थाय ॥ २ ॥ इम चिन्ती मिल्या विना । चाल्या गगन मझार । कौतक रसिया जीवडा । आलस न करे लगार ॥ ३ ॥ उत्तमपुरे उतंग गीरे । गह न वने सर पाज । उदधि आदि स्थान के । विचरे इच्छे त्यांज ॥ ४ ॥ मणी प्रभावे पूरवे । मनोर्थ मन का सर्व । पुण्यात्मने पगपगे । वरते सदा ही पर्व ॥५॥ ❀ ॥ ढाल ८ वी ॥ श्रेणिकराय हूं रे अनाथी निग्रंथ ॥ यह ॥ श्रोताजन सुणियां पुण्य विरतंत । जयसेण कुमर पुण्यवन्त ॥ श्रोता ॥ टेर ॥ तिण अवसर मही मंडणोजी । जयपुर नगर प्रधान । गढ मढ मन्दिर मालीयाजी । अलकापुरी ने समान ॥ श्रोता ॥ १ ॥ जेत्रमल नाम शोभतो जी । न्यायी तहां को नरेश । दाता भुक्ता गुणनिलोजी । सुखद सहु ने हमेश ॥ श्रो० ॥ २ ॥ जेत्री आदि तीनसोजी । अंगना रूप शीलवान । पुत्र पांचसो ऊपरेजी । एक पुत्री गुण खान ॥ श्रो० ॥ ३ ॥ जेत्रश्री जीती लक्ष्मी जी । रूप कला बुद्धि तेज । शशी-

वदनी ज्यों सुरांगना जी । पेखत उपजावे हेज ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ तिणही पुर माहें रहे जी । कामलता वैश्या अनूप । रुपे लजाइ अपत्सरा जी । तेजे दीपे जैसे धूप ॥ श्रो० ॥ ५ ॥ चन्द्राननी कुरंग लोचनी जी । शुक घ्राण अरुणोष्ट । कम्बू ग्रीवा उर उन्नती जी । सुवर्ण वरण अंगोष्ट ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ गजगमनी दंतदामनी जी । कामनी मोहन वेल । पांचसो दिनार देवे सोही जी । भोगवे ताको छेल ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ जयकुमर आया पुर विषे जी । ऊभा तस घर द्वार । नयन वयन लटका करीजी । मोहित कीया कुमार ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ वांची पट गांही गया जी । द्रव्य अपार तस देय । विलसे सुख पांच इन्द्रिका जी । सदा तहां सुखे रेय ॥ श्रोता ॥ ९ ॥ मणी तणे प्रशाद से जी । नित्य प्रत वहू गोलगाल । वस्त्र भूषण भोजन दिये जी । द्रव्य इच्छित तत्काल ॥ श्रो० ॥ १० ॥ माता कामलता तणी जी । कपट कला की भन्डार । अक्षा वृद्ध वये हुइ जी । जाग्यो लोभ अपार ॥ श्रो० ॥ ११ ॥ एकदा सा चित चिन्तवे जी । मूर्ख पुत्री मुझ । लुब्धि एक ही नर संगे

जी । जाणे न कुल को गुभ ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ बोलाइ कहे पुत्री ने जी । अनिष्ट
वयण करूर । तें एक नर धारण कियोरी । फूली योवन के गरूर ॥ श्रो० ॥ १३ ॥
कुलाचार किम थें तज्योरी । भंग कियो लियो नेम । पांचमो मोर नित्य तुभ
दियेरी । तास्युं हीं कीजीये प्रेम ॥ श्रो० ॥ १४ ॥ कामलता देखाडीया जी ।
माणी भूप बहु मोल । अक्षा खुशी हुइ घणी जी । लोभित हो करे तोल ॥ श्रो०
॥ १४ ॥ खाली हाथे आवीयो जी । कि हाथी लावे गह माल । विचारी पूछे
पूत्री को जी । कहे तुं देख्या जे हाल ॥ श्रो० ॥ १५ ॥ ना कहे छोटा बडसा गर्की ।
कोटडी मांहि जाय । वस्त्र भूषण भोजन दिये जी । नीणा मांही ते लाय ॥ श्रो०
॥ १६ ॥ पुनः कहे अक्षा पूछुं तुं । तास मोह उपजाय । यह करामात हाथे लगे
तो । दरिद्र आपणो विरलाय ॥ श्रो० ॥ १७ ॥ तनुजा कहे कांई अक्षो जी ।
पूछे विन ए वात । अनिष्ट लगे जाये नही तो । मुभ ने विरह न खमात ॥
श्रो० ॥ १८ ॥ नियम मे अधिको देवे जी । द्रव्य धारण नित्य तेम ।

अति लोभ दुःखदायी है जी । न कीजे कोइ को श्रेय ॥ श्री० ॥ २६ ॥ इम कहो ने भगगइजी । आइ कुमरजी पास । अन्तर नहीं जणावतीजी नित्य नव अकरन विलास ॥ श्री० ॥ २७ ॥ कुमरीरय पगये लहेजी । लोभ मनही जाय । अपुर्नी टाल अमोलनेजी । जो ये पाप को उपाय ॥ श्री० ॥ २८ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अकाले लागो भनदा । लोभ लगा विकराल । वारम्वार कहे पुत्री को । पूछ कहां से दे माल ॥ १ ॥ अग्रह अति जाणी मात को । एकदा अवसर जोय । ललचाइ पूछे जय मणी । फरमावो गुप्त मोय ॥ २ ॥ इच्छित वस्तु नित्य प्रते । जो अरों हम तोर । कहो ने लावो स्वामीजी । सची दो फरमाय ॥ ३ ॥ विजय मणी चित चिन्तवे । जो गम्य में छिपाय । तो ता भंग पडे प्रेम में । स्नो यह दुःखपाय ॥ ४ ॥ गुप्त कहवो नहीं कोइने । नारी ने तो विशेष । उत्पात करे उपज । यह नीति निरेश ॥ ५ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥ न कस्यापि प्रकाशितः । गुह्य स्त्रीणां विशेषत । तस्य तथापि सप्रोच । स्त्रोचस्यं किन कुर्वंत ॥ १ ॥ ❀ ॥

दोहा ॥ पण यह वचन ने वीसरी । मोहमद छकी कुमार । वीतक वात दाखी सहू । अखन्ड निभावा प्यार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ६ मी ॥ मोक्ष पद पावे हो जिनन्द गुण गावतां ॥ यह० ॥ कपट कला देखोरे चतुर वेस्यातणी ॥ टेर ॥ कामलता निज मातने गरे । कही सगली वात मांउ । अक्का सुणी हर्षी घणी सरे । ज्यों क्षुधित चीर खांड ॥ क० ॥ १ ॥ तेह मणीने हरण करण को । उत्सुक थयो तस मन । कपट कला केलववा कारण । करवा लागी यतन ॥ क० ॥ २ ॥ छल छिद्र नित्य देखे विजय का । मूशक मंजारी जेम । परन्तु मणी हाथ नहीं आवे । धरे चित्त अखेम ॥ क० ॥ ३ ॥ तब समझी हां शार घणोये । मणी रक्खे निज पास । किणरीते मुझ हात ए लागे । करूं कैसो प्रयास ॥ कप० ॥ ४ ॥ अवसरे नित्य कुमर पास आइ । भक्ति करे बहु कोउ । कला केलवी वस्य किया तस । कुण करे कपटी होउ ॥ क० ॥ ५ ॥ चन्द्रहांस मदिरा तस पाइ । डाली भरम के मांय । क्षिण में प्रवस्य हुवा कुमरजी । तब हर्षी ढिग आय ॥ क० ॥

माय ॥ क० ॥ १४ ॥ इन पुण्यवन्त कोमें नहीं छोडूं । जबलग जीव तन माय ।
धन इच्छा किंचित नहीं मुझने । गुणवन्त की है चहाय ॥ क० ॥ १५ ॥ पूर्वो
पार्जित कोइ पुण्य जोगे । यह आया अपने द्वार । अपार द्रव्य दियो अपने
तांइ । किम कहाडी जे बार ॥ क० ॥ १६ ॥ कृतघ्नता को पातक मोटो । निर्दय
काम न कीजे । तुम दानी श्याणी सहू समझो । मुझ एसी शिक्षा न दीजे ॥
क० ॥ १७ ॥ तो पण वृद्धि वात न माने । ताणे अपनी रुढ । वार २ कहे
निकाल जल्दी । लोग वस्य हुइ मुढ ॥ क० ॥ १८ ॥ कामलता तो जरा न
माने । करे नित्य नवल विनोद । ते देखी अति डोसी प्रजले । करवा लागी
विरोध ॥ क० ॥ १९ ॥ कामलता ने कामे पठाइ । जयजी को कियो अपमान ।
कर झाली कहाड्या घर बाहिर । बोली हलकी जबान ॥ क० ॥ २० ॥ कुमर सदन
तज आरत धरता । जा बैठा गुप्त स्थान । कामलता आइ पति न दीठा । कीनो
आर्त ध्यान ॥ क० ॥ २१ ॥ निज दासी हाथे ढुंढाया । पण कुमरजी नहीं पाया ।

हुइ निराश अति दुःख धरतां । अन्य नर नहीं चित्त लाया ॥ क० ॥ १२ ॥ शील धर उत्तम आचरणां । यों पुण्यात्म पावे । ढाल यह नवमीं गाई अमोलक । शीघ्र शील सुख आवे ॥ क० ॥ १३ ॥ • ॥ दोहा ॥ गुप्त स्थान उपजो चित्त । ध्यावे आर्त ध्यान । नीच नारी संगत करी । पायो मैं अपमान ॥ १ ॥ अमूल्य महा मणी गई । दुःखी भमता संग ॥ नीच पुरुषा हरी । कियो मन इन संग ॥ २ ॥ किहां जाय किणने कहुं । करूं अब कांइ उपाय ॥ आफस्यो कर्म जाल में । हे प्रभु अब करू कांय ॥ ३ ॥ विचारी मणी सगर्थी । छोड्यो वेवन संग । ते गई सब सुख लेइ सुभ । अब होसी किस्यो ढंग ॥ ४ ॥ कर कपोल दृष्टि महीं । नयण नीर वहाय ॥ देखो पुण्यात्म प्राणीया । शीघ्र ही सब सुख पाय ॥ ५ ॥ ढाल १० वीं ॥ ब्राह्मी ने सुंदरी दोनों बाइ । यह०॥ हिवेतिण अवसर ने मांइ । जेत्रमल राजारी जत श्री बाइ । खेले सखीयों ने मझारो ॥ पुण्य वन्त ने सुख मिले अपारो ॥१ ॥ खलती नदी ने तट आइ । सखीयों साथ ने पण

न्हाइ ॥ वस्त्र गजी निकली बारो ॥ पु० ॥ २ ॥ कुमरी ना अशुभ कम जाग्या । आनन्त
पीशाच तस अंग लाग्या । मुर्छा पडी धरणी तत्कालो ॥ पु ॥ ३ ॥ जैसे वृक्ष
तणी तूटे शाखा । मुख फाटो विकराल आंखा । देखी सखीयां डरी अपारो ॥४॥
केइ दोडी आइ राजाजी पासे । वीतक वात सब प्रकाशे ॥ घबरायो भूप सुणी
समाचारो ॥ पु ॥५ ॥ तत् चीण आया कमरी पासे । देखी चेष्टा हुवा उदासे ।
सज्जन मजन मिल्यो परिवारो ॥ पु ॥ ६ ॥ केइ रोग केइ दोष बतावे । यो केइ
केइ तरह वेमलावे । लाया उठाइ भवन मझारो ॥ पु ॥ ७ ॥ मंत्र तंत्र जंत्रवादी
घणा आया । डोरा दांडा धुप दीप केइ लगाया । औषध भेषद करे उतारो ॥
पु ॥ ८ ॥ भोपा बाबा वैद्य सब हर्यां । एक ही गरज नहीं सार्यां । निकम्मा भया
सहु उपचारो ॥ पु ॥ १० ॥ वेदना अधिक बढन लगी । चेष्टा बिगाड़ी मरण भीती
जागी । मचो मेहल में हाहा कारो ॥ पु ॥ ११ ॥ नृप राणीया भाइ भोजाइ । सहूने
प्यारी अति बाइ । कर्म आगे सब लाचारो ॥ पु ॥ १२ ॥ सचीव कहे महीपति तांई।

अरसाना ॥ ५ ॥ ... टाम जमाना ।

... । माहे । दोनों कमरी

... ॥ ९ ॥ २० ॥ ततक्षण कुमरी मानव

... अन्यच्च दर्शा चमत्कारा ॥ ९ ॥ २१ महा पुरुष

... संकाल करे यह ख्याल्या । जोगी जोर्दाये करो

संस्कारो ॥ पु ॥ २२ अति उत्सवे जेतश्री परणाइ । उत्तम मेहल दीया रहवा
तांइ । वस्त्र भूषण दास आदि सुख सारो ॥ पु ॥ २३ ॥ दो गुंदक सुरवर की
परे । जयजी नित्य प्रत भोज करे । गुणवन्ती मिली छे गुण धारो ॥ पु ॥२४॥
अचिन्त्य फले करी पुण्याइ । दाखी । ढाल दशमी मांइ। ऋषि अमोल करे उचा-
रो ॥ पु ॥ २५ ॥ दोहा ॥ तिण ही पुर मांहे रहे । धूर्त एक सिरदार । तृष्णा से
प्रेर्यो अति । कपट कला भन्डार ॥ १ ॥ जय महिमा तिण सांभली । ओपधी
को प्रभाव । ते लेवण इच्छा जगी । रचीयो तव ही उपाव ॥ २ ॥ छत्री रूप
सागे करी । रह्यो आजयजी पास ॥ विनय विवेक भक्ति करी । कीया कुमर वस्स
सार ॥ ३ ॥ जयजी भद्रिक भाव से । रीझ्या गुण तस जोय । गुप्त कछु राख्यो
नहीं । दीठी जडी ते सोय ॥ ४ ॥ हर्ष्यो अवसर पाय के। ले गयो तेह उठाय ।
जयजी भेद न जाणीयो । सरल पणे सुखे रहाय ॥ ५ ॥ ढाल ११वी ॥ [illegible]
गंवर जिन वर यों कहे ॥ यह ॥ कोइक कारण [illegible]

जगा नदा ॥ चाल ॥ तदा तिहां धूंटी न पाइ । धम्काइ पवरावीया । कहां गइ कोई हरण कीनी । शोक इम बहू आवीया । न देख्यो भट जोवायां तव । तास पत्तो नहीं पावीयो । सुणो श्रोता कहे वक्ता । धूर्त तेहने ठरावीयो ॥ १ ॥ कुमर चिन्तातुर चिन्ते चितने । धिक्क २ होजोजी कपटी मितने ॥ चाल ॥ कपटीमित विश्वास पमाडी गमाडे वित आपणो । सेवा साधे वयण आराधे करे कार्य बहुल पणो । आखीर घातक पातक करके चिन्ता ज्वाला मिलगावई । कहे वक्ता सुणो श्रोता कुमित्र काम न आवइ ॥ २ ॥ शोक कियां से हो पाछो न पामीये । समता रखे तो सुख मिले नामीए ॥ चाल ॥ नामी फल मिले समता से । औषधी को फल में जियो । वह गुणवन्ति राज कन्या । पाणी ग्रहण इण से भयो । गयो कांइ आपणो । यह लाभ मे हर्ष आवइ । कहे वक्ता सुणो श्रोता । समता से सुख पावइ ॥ ३ ॥ देव जो दीधी हो दिव्य मणी औषध । सो कैसे जावे हो ।
ग्रंथी ने ग्रेषण ॥ चाल ॥ पोशक छोडन जावे कवह । दोडी मिलेगा पुण्य थी ।

देवे दीधी देव देशी । पुगय थी कुछ न्यून नथी । यों ज्ञान से चित्त स्थान ला कर सुखे रहे कुमर सही । कहे वक्ता सुणो श्रोता । ज्ञान पदार्थ सुखदइ ॥ ४ ॥ हिवे ते थक्कारे वैश्या एकदा । धन इच्छा धर पूजी मणी तदा ॥ चाल ॥ पूजं मणी इच्छा घणी धन देवो देव हम भणी । पुगय विन देव तुष्टे नाहीं । किम पूरे इच्छा तेह तणी । फूटी कोड़ी धन नहीं मिल्या से । मन में अति पस्तावइ । कहे वक्ता सुणो श्रोता दगावाज दुःख पावइ ॥ ५॥ पुत्री निर्भछेरे माधि क्क तुझ भणी । पुगयवन्त कहाड्यो में जाणी बुद्धि तुझ तणी ॥ चाल ॥ तुझ तणी बुद्धि भृष्ट भइ । हाथ श्रायो निधी खोइयो । मुझ वल्लभ को अन्तर पाडहो । हृदय अति मुझ रोइयो । हिवे तस छोडी अवर न वांछू । निश्चय मुझ मन यह सही । कहे वक्ता सुणो श्रोता । मिती यों जणावइ ॥ ६ ॥ सब परिवार हो निन्दे थक्का भणी । धिक्क २ बुद्धी रे कहाडयो पुगय धणी ॥ चाल ॥ पुगय धणी हुवा राज जमाइ । हिवे एहवी खोउ कहाडस्ये । धन लूंटी निकाली कूटी । फोडा वहुत ही

को नहीं । कहे वक्ता सुणो श्रोता । स्वामीयां बोले गही । भानू अस्ते जी कमल
ज्यूं कूमले । त्यों तुम विरह थी पुत्री मुझ टलवले ॥ चाल ॥ खिल खिले नैन
जरा नहीं पडे । वियोग अग्नि मे जल रही । संजोग रूपी नीर सींची । शीतल
करो दया लही । तुम वियोगे मरण पासी । अति कर संताप थी । कहे वक्ता सु-
णो श्रोता । सुखी होसी वेग आप थी ॥ ११ ॥ एक काम वली हे म्हारे सही ।
आप विना ते अन्य ने कहवो नहीं ॥ चाल ॥ नहीं कहवो वल्लभ विना किस
ने । नहीं अन्य तुम मारखो । सहा मणी हमे घर में लाधी नहीं जाणा हम पार
खो । तेह भणी हम तुम ने आपां लीजीये कृपा करी । कहे वक्ता सुणो श्रोता ।
कुमर हर्ष्यां देखि सिरी ॥ १२ ॥ भा फिर बोली हो तुम होता जदा । हमने नि
त्य नवी वस्तु देता तदा ॥ चाल ॥ वस्तु नित्य नवी देता हम ने । तुम ने यह
कारण आपीये । अन्य हमारे नहीं तुम सरीखो । चाकर कर दिग थापीये । कृपा
करी मुझ घर पधारो । पतीत पावन कीजीये । कहे वक्ता सुणो श्रोता । म्हारे

नित्य नवला सुख भोगवे । खान पान ने स्नान । गान तान गुलतान में । मग्न-
ता माने राजान ॥४॥ जय जी की आज्ञा मुजब । सहू रहे एक चित्त । पुण्यात्म ने
कमी किसी । आनन्द मंगल नित्य ॥ ५ ॥ ढाल १२वी ॥ रे लाला विछीयो म-
हारो बाजणो ॥ यह० ॥ रे भाइ कुमरी सुणी यों वारता । तुम पति गया वेश्या
घोररे भाई । मुरछाइ धरणी पढती । याती आरत करे वहू पेर रे भाई । धिक्क
२ व्यथी जीवने ॥ टेर ॥ १ ॥ रे भाइ शीतल पवन जले करी । ते चीण अन्तर
ने मायरे भाई । सावध हो रोती कहे । हिवे म्हारी गति सी थायरे भाइ ॥ धि-
क्क ॥ २ ॥ रे भाइ वेश्या व्यथी मुभपति । पड्यो कामलता ने फन्द रे भाइ ।
लाज रखी नहीं कुल तणी । थया मोहोदय से अन्ध रे भाइ ॥ धि ॥ ३ ॥ रे
भाइ उर कूटे सिर आथड़े वहे नेत्र नीर परनाल रे भाइ । दासी दोडी गइ भूप
पे । कह्या बाइ का सहू हाल रे भाइ ॥ धि० ॥ ४ ॥ रे भाइ नृप शोकातुर थयो
अति । वली लज्जाणो घणो मन रे भार । मुभ जमात नायिका घरे । कुलनिन्द से अव

जग जनरे भाइ ॥ धि ० ५ ॥ रे भाइ शीघ्र आवा कुमरी कने । लीनी खोला
में बेटागरे भाइ ॥ कर से आधू पूंछने । धुनकारी कहे इमवायरे वाइ ॥ धि ॥
६ ॥ रे वाइ फीकर किंचित करे मति । तुंछे मुझ जीवन प्राणरे वाइ ॥ पर्यंत
करी तुझ पति भणी । देस्यूं थोडा दिने ठाम आनरे वाइ ॥ धि ॥ ७ ॥ अय रे भाइ
गर्वाकने कहे भूपति । शीघ्र जावो वेश्या आवसरे भाइ ॥ तेडो धिकारी जमातने ।
लागे हम कुल ने कालासरे भाइ ॥ धि ॥ ८ ॥ रे भाइ पायक लेइ प्रधाजनी ।
गया कामलताने घेर रे भाइ ॥ वाहिर रही मोटा साद से । कहे जयजीने यों
टेर रे भाइ ॥ धि ॥ ९ ॥ अहो भाइ झट निकलो घर वारणे । छोडी नीच नारी
नो संग रे भाइ ॥ लज्जा धरो जरा कुल तणी । यों केसे भइ मति भंगरे भाइ
॥ धि ॥ १० ॥ रे भाइ सुण के कुमर अति लाजीया । पड्या फिकर समुद्र के
मांयरे भाइ ॥ धिक धिक मुझ व्यश्री भणी । राय चाकर साथ बोलायरे भाइ
॥ धि ॥ ११ ॥ रे भाइ इण जीणे से मरणो भलो । केसे जाके देस्यांतु मुख रे

भाइ ॥ सब तर्जनी से बतावसी । हुयो कुमर मने अति दुःख रे भाइ ॥ धि ॥
१२ ॥ रे भाइ मही भाग दे अवी मुझ भणी । तो पेटूं में प्यारे उद्धरे भाइ ॥ रा-
जाजी किस्यो जाणसी । निकल्यो म्हारो जमाइ क्षुद्र रे भाइ ॥ धि ॥ १३ ॥ रे
भाइ राज घरे जाणो नहीं । वली इहां पण रहणो न थायरे भाइ ॥ लज्जा जीवित
दोइ रहे । ऐसो करूं में हिवे उपाव रे भाइ ॥ धि ॥ १४ ॥ मणी तणे प्रभाव से ।
गया गगने उडी देसंत्र रे भाइ ॥ स्वदेश की चोरी थकी । भीत्ता भली कहे
अन्यत्र रे भाइ ॥ धि ॥ १५ ॥ रे भाइ आश्चर्यां गणिका चुप रही । चुप चाप गया
प्रधानरे भाइ । वात वीती कही जयतणी । ते सुण विसम्या राजान रे भाइ
॥ धि ॥ १६ ॥ रे भाइ कुलवन्त कुमर लाजी गयो । हे पुण्यवन्त विद्या भरपूर
रे भाइ ॥ चिन्तामत कर मुझ लाडली । तुझ ने कन्त मिलसी जरूरे भाइ ॥
धि ॥ १७ ॥ रे भाइ गुणवन्त सज्जन वीसरे नहीं । दुर्गुणी से नहीं पले प्रेमरे भाइ । इत्या-
दि योग्य वचन थी । कुमरी पाइ चित खेमरे भाइ ॥ धि ॥ १८ ॥ रे भाइ राजा

जी स्थाने गया । कुंवरी पडी सोच माय रे भाइ । वियोग साले पति तणी । पण गुणी जाणी हर्षायंर भाइ ॥ धि० ॥ १६ ॥ यह अन्तराय कभी टूटसी मुझ । मिलसी थाइ भरताररे भाइ । शील पसाये सुख पामस्युं । रही दृढ पतिव्रत धाररे भाइ ॥ धि ॥२०॥ रे वाइ भूमी सयन आहार एक टंक । तज सिणगार धर्म ध्यान ध्यायरे भाइ । अमोल कही ढाल वारमी । कांइ विघ्न तज्यां सुख पायरे भाइ ॥ धि ॥ २१ ॥ दोहा ॥ मणी प्रभावे कुमरजी । रूप परावर्ती कीध । वृद्धवयी जोगी वण्या । सामग्री सव सिध ॥ १ ॥ जटा मुट दीर्घ कावरी । अंबर भगवां अंग । भस्मी रमी भाले तिलक । वैराग्य नेत्र रक्त रंग ॥ २ ॥ गले दाम कर स्मरणा । तुम्बि झोली कांख । चिमटा दंड करमे धरा । ईस नाम मुख भाख ॥ ३ ॥ लंगोट तंग अनंग जय । पगमें ऊंच खडाव । पुष्ट ऊंच तन भाल दिव्य । करे सो रण में पडाव ॥ ४ ॥ स्वेच्छा भूखग फिरे । पेखे पुर वर ठाम ॥ आनन्दे काल निर्गमे । अब कहूं पुण्य परिणाम ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल १३

वी ॥ निन्दक तूं गति मरजेरे ॥ यह० ॥ भविका पुण्य बल देखोजी । गत वस्तु प्रापति होय ॥ टेर ॥ एकदा एक वनके विषयजी । शकुन हुवा श्रेय कार । अर्थ समझी आश्चर्य लहो । इण महा अटवी ने मझार ॥ भ ॥ १ ॥ गत वस्तु कैसे मिले । ये शकुन न निष्फल जाय ॥ स्थान मनोरम देखके बेठा तहां ध्यान लगाय ॥ भ ॥ ॥ २ ॥ अचिन्त्य तिहां आयो तदा जी कपटी अवधूत वेष । जय जी जोगी जो हर्षायो । नमन कियो विशेष ॥ भ ॥ ३ ॥ सेवा साचवे अति हितेजी । कुमर ओलखीयो तास ॥ बात प्रगट करी नहीं । नहीं पूगे जिहां लग आस ॥ भ ॥ ४ ॥ ढिग रह्यो शिष्य होय के जी । भक्ति करे अपार । जयजी भीतस पोषताजी । भोजनादि सत्कार ॥ भ ॥ ५ ॥ अण निपजाया नित्य दिये जी । इच्छित भोजन पान । करामाति जोगी जाणनेजी । धूर्त हर्ष्यो असमान ॥ भ ॥ ६ ॥ एकदा कार्य साधवाजी । करे गुरू ने प्रसन्न । कुमर मन तस ओलखी । निज श्लाघा करे कथन ॥ भ ॥ ७ ॥ मंत्र जंत्र मणी ओषधी जय । मुझ से छिपी न लगार ।

दिये। ये एक गुण इसमें कठोर ॥ भ० ॥ १६ ॥ दगाबाज तस्कर भणी यह। संतापे दिन रात। तूं निश्चय महाधूर्त है। कर आयो किसकी घात ॥ भ० ॥१७॥ यहां फल इस पाप का मैं, तुझे बताउं आज। फिर आगे तूं नहीं करे। ऐसो महा कोइ अकाज ॥ भ० ॥ १८ ॥ इम साची सुण विसम्यो अति। भये थरथरी छूटी अंग। औषधी छोड भागी गयो। कुमर न कियो तस संग ॥ भ० ॥ १९ ॥ पापी पापोदय करीजी पीडा सहजे पाय। धर्मी के धर्म प्रसाद से जी। सहजे जाय बलाय ॥ भ० ॥२०॥ मणी औषधी गइ पुनः मिलीजी। जयजी अति हर्षाय। पुण्य फल दर्शावणी। ढाल तेरे अमोलक गाय ॥ भ० ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ प्रदेश के प्रयास को। दुःख नहीं वेदे लगार। सार हुवो फिरवा तणो। वस्तु पाया श्रेयकार ॥ १ ॥ जो कार्य पापिष्ट को। दुःख का कर्त्ता होय। सोही कार्य पुण्यवन्त के। सुख कारक लो जोय ॥ २ ॥ निकले थे अपमान से। लज्जित हो दुःखपाय। कारण से कार्य पलट्यो। महा औषधी मिली आय ॥ ३ ॥ हर्षित हो आगे चले।

शुभ वस्त्र सजा तन । जेष्टिका कर विपे ॥ होसु ॥ जेष्टि ॥ चंदन तिलक लिलाट । माल गलं में दिये ॥ होसु ॥ माल ॥ ११ ॥ एक हाथे करताल । वजावे चूंपसे ॥ होसु ॥ वजा ॥ दूजे हाथे फिरे माल । चले भक्त रूप से ॥ होसु चले ॥ आये मध्य वंजार । देखण लोक वहू जम्या ॥ होसु ॥ देख ॥ हंसे हंसावे सव तांय । वावन जी मन रम्या ॥ होसु ॥ वाव ॥ १२ ॥ पडह वाजंतो सुण । कारणं सव पूछिया ॥ होसु ॥ कार ॥ विस्तारी हुइ वात । भक्त ने जन किया होसु ॥ भक्त ॥ वावनो कहे करूं आराम । क्षिणेक के मायने ॥ होसु ॥ चीण ॥ देखो करामात मुफ । सर्व तहां आयने ॥ होसु ॥ सर्व ॥ १३ ॥ सखी कहे भक्तजी मन । भक्तणी चाविया ॥ होसु ॥ भक्त ॥ राय कन्य जोग जोडो । येही जग पाविया ॥ होसु ॥ येही ॥ वरीयां विन केसे रेय । सुरूपा इन सारखा ॥ होसु ॥ सुरू ॥ यों हंसे सव लोक । क्या जाने पारखा ॥ होसु ॥ क्या ॥ १४ ॥ कितनेक दाने शाणे आय । शिक्षा देवे इसी ॥ होसु ॥ शिक्षा ॥ गये करामाति वहुत हार । तो थारी चली किसी

विष सहु विरलाविया ॥ होसु ॥ विष ॥ निद्रागत की पेर कुमरी सावध हुइ ॥होसु॥
कुम ॥ हर्ष्यां सब परिवार । चिन्ता आरत गइ ॥ होसु ॥ चिन्ता ॥ १६ ॥ नरवर
पुरजन सर्वी । आश्चर्य अति पाविया ॥ होसु ॥ आ ॥ बावनजी की करामात ।
सर्वी सरसाविया ॥ होसु ॥ सर्वी ॥ करामातां बावना भक्त । विरला जग तुम
सम ॥ होसु ॥ वि० ॥ चमत्कार प्रत्यक्ष । देख सब मन रमा ॥ होसु ॥ देख ॥
२०॥ महीमा फैली पुर मांय । हंसक शरमाविया ॥ होसु ॥ हंस ॥ पुण्य पसायें
जगजी का हुवा चाविया ॥ होसु ॥ हुवा ॥ यह हुइ नेरवी ढाल । रसाल कौतक
तणी ॥ होसु ॥ रसा ॥ कहे अमोल अणगार । आगे मीठी घणी ॥ होसु ॥
आगे ॥ २१ ॥ ✪ ॥ दोहा ॥ नव जीवन कन्या लियां । हर्ष्यां सब परिवार ॥
बावन भक्त तणां सर्वी । मान्यां अति उपकार ॥ १ ॥ आनि टली आँखो खुली ।
हुवो राय ने विचार ॥ अहो प्रभु इण स्थान के । बचन पडे फैसे पार ॥ २ ॥
चन्द्र कला सम वाइ सुरू । यह राह प्रत्यक्ष ॥ गुण अन्तर नही अन्त लिख ।

नु ॥ वडा ॥ ५ ॥ मैं दुर्भागी हीण अंगी ने । रंभा किम दीजे ॥ हंसली ग्रीवा
वायस बन्धन । अन्याय किम कीजे ॥ वडा० ॥ ६ ॥ जो कदापि आप जवरी से।
पुत्री मुझ देशो ॥ अङ्गीकार मो नहीं कियो तो । क्या शोभा लेशो ॥ वडा ॥७॥
सामन्त परजा आचरण बोलेगा । ते सभा न जाशे ॥ इस कारण मुझ ना कहो
तो । सब जन सुख पावे ॥ वडा ॥ ८ ॥ सुन्दर मुझ से ग्रही न जावे । कारण
सब जाणे ॥ चतुर सोड ओडण को जितनी । तित ना पग ताणे ॥ वडा ॥ ९ ॥
भाग्य पार जो वस्तु इच्छे । सो मूर्ख जग मांइ॥ इसलिये मैं परणुं नाहीं। फिकर
तजो राइ ॥ वडा ॥ १० ॥ वचन सुगड यों सुन वावन का। सब आश्चर्य पाया॥
प्रत्यक्ष चमत्कार यह देखो । निर्विषयी निर्माय ॥ वडा ॥ ११ ॥ ❀ ॥ श्लोक ॥
कचित् गुणः रागी नरा । तत् गुणवन्त कचित् ॥ तत्। गुणवन्त गुणे रक्ता । स्व
गुण प्रेक्षा कचित् ॥ १ ॥ ❀ ॥ ढाल ॥ गुणानुरागी होकर धरा धव । नरमी यों
बोले ॥ तुम सम गुणवन्ता निर्लोभी । न मिले जग खोले ॥ वडा ॥१२॥ निश्चय

पुत्री मुगतो दी देवंगा । वचन म्हारा पाल ॥ प्राण जावो पण वचन न जावो । उत्तम रीति चाल ॥ वडा ॥ १३ ॥ राम लक्ष्मण वचन पालन । वन में वास कीना ॥ हरिश्चन्द्र दारा तनुज वेच कर । मेहतर घर लीना ॥ वडा ॥ १४ ॥ यों अनेक दृष्टान्त दे भूपन । व्याचन हट करायो ॥ तब मामान्न कुटम्ब बदल कर । ना कारो भरायो ॥ वडा ॥ १५ ॥ सबही वयण मुणी अमन कर । लग्नोत्सव मंडा- यो ॥ वावनजी को मोक्षब काजे । द्रव्य आनि दीलायो ॥ वडा ॥ १६ ॥ नवरंग महल दीया रंग को । हय गर आदि माग । उत्तम लग्न महूर्त दिखायो । आवो मर्जी प्यारा ॥ वडा ॥ १७ ॥ द्रव्य तहां मर जोग आ मिले । वने मज्जन केइ । मिली महेली मङ्गल गावे । गगन गरजेइ ॥ वडा ॥ १८ ॥ वाजित्र वाजे विविध प्रकार । वन्दोला फिरता । देख विरूप हम्य बहू कौतकी । केइ आश्चर्य धरता ॥ वडा ॥ १९ ॥ यां आनन्द लग्न दिन आया । मर्जी अति मजाइ । गजारूढ हो नर्जाय ॥ रावनजी । सुवर्ण वर्षाइ ॥ वडा ॥ २० ॥ लग्न मंडपे आया भराया ।

सज्जन पुरजन सारा । ढाल चतुर्दश कही अमोलक । अब देखो चमत्कारा ॥ वडा ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ राजकन्या भी सज हुइ । आइ मंडप मांय । वावन कर स्पर्श नहीं । सब रहे आश्चर्य पाय ॥ १ ॥ पाणी ग्रहण करो नृप कहे । तब वावन कहे राय । मैं नहीं जोगो सुन्दरी । क्यों जबरीये परणाय ॥ २ ॥ महीपत कहे जोगा लखी । मैंने दी तुम ताय । अटल वयण मुझ ना फिरे । जो कभी मेरु कम्पाय ॥ ३ ॥ पूछे नृप निज अंगना । कहो देनी के नाय । सा कहे आप हुकम विपे । म्हारी खुशी सवाय ॥ ४ ॥ कुमरी को पूछे कहे । यह मुझ मोड समान । इनके विन सब जगनरा । आप समा लिया जान ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १५ मी ॥ आज महारा संभव जिनका ॥ यह० ॥ अहो सुज्ञजन आज आनन्द घन । नगर में हुई वधाइ राज । सत्य मे सर्व सुख जन पावे । दिन २ वधे पुण्याइ राज ॥ यहो ॥ १ ॥ यों देखी अति जय हर्षाया । परीक्षा पूरी थाइ । महा सत्यवन्तो क्षितीपति जाणयो । नेमीही राणी वाइ राज ॥ अहो ॥ २ ॥ निज स्वरूप तब प्रगट

करन को । बावनजी बोल्याइ अहो भूपादि सुणियो सर्व जन । कहूं मुझ मन जे भाइ राज ॥ अहो ॥ ३ ॥ कुरूप कन्या रत्न प्रहरो । नीति में युक्तो नाही । इस-लिये मैं विद्यावल से. बनु नलकुवर साइराज ॥ अहो ॥ ४ ॥ सत्य प्रभाव तुमारो प्रकास्यूं । मुझ विद्या दरशाइ । सब मिल कुछ कर सको नहीं । पण मेरे में कोने धाइ राज ॥ अहो ॥ ५ ॥ नर देवो शक्ति फलदाता । जो कर जाने कमाइ । मूल रूप अब देखो मेरा । सह अजना दिखलाइ होराज ॥ अहो ॥ ६ ॥ नगर बाहिर बहु लम्बी चौडी । तो पर भाइ चिणाइ । बावनो चन्दन बन्दी प्रजालो । शीघ्र करो यह सजाइ होराज ॥ अहो ॥ ७ ॥ ज्वाला स्नान किया मुझ तनको । रूप बने इन्द्रमाइ । दिल तुम बाट स्वर्ण ने परखणूं । इसमें शंका नाही होराज ॥ अहो ॥ ८ ॥ सबी ने यह मरणा चहावे । अग्नि मे कौन उचर्याइ । सब समझायो पण न मानो सबाइ में अनल दीपाइ होराज ॥ अहो ॥ ६ ॥ न्हाइ धोइ गन्ध लगाइ । सब भूषण सजाइ । कन्जरा रूढ हो बाजित्र नादे । सब जन मे परवर्यो

इ होराज ॥ अहो ॥ १० ॥ अपूर्व आश्चर्य जन देखन को । आगे २ धाइ । कोडों गम जम्यो वन्ही कुंडपे । कौतक कौन न चहाइ होराज ॥ अहो ॥ ११ ॥ ज्वाला गगन तले अवलम्बि । ढिग ऊभो न रहाइ । केइ अचंभे केइ खेदाश्चर्य । देखे दृष्टी लगाइ होराज ॥ अहो ॥ १२ ॥ स्मरी मंत्र सर्व देखंता । जाइ पड्यो कुंड मांइ । हाहाकार मच्यो अति तव तहां । किम जीवत यह थाइ होराज ॥ अहो ॥ १३ ॥ छिणन्तर में देव जेसा बन । वाहिर आऊ भाई । गानन्दाश्चर्य सहु पाइ । इम अमि से सगाइ होराज ॥ अहो ॥ १४ ॥ औषधी महिमाए । विश्वानल की । ताप न किंचित्त लगाइ । सजा भूषण मूल रूपे तव । अधिक रमा सो भाई होराज ॥ अहो ॥ १५ ॥ नृपादि तस अति सत्कारी । पूछकर हर्ष लाइ । यावनजी ब-नीया किण करण । साची देवो फरमाइ होराज ॥ अहो ॥ १६ ॥ मूल मंडाण से योगी हकीगत यथा तथ्य दीनी सुनाइ । मंत्र औषधी मणी-प्रभावे । चिन्तित काज सिधाइ होराज ॥ अहो ॥ १७ ॥ सुणी वाणी अति विस्मय मानी । जय २

विजय वधाइ। धन्य २ नर महापुण्यात्मा। धन्य वाइ की पुण्याइ होराज ॥ अहो ॥ १८ ॥ अति उत्सवे पुनः शेहर में लाया। दिया तेही महले उतराइ। सर्व जन गया निज २ स्थाने। वाकुजों कीर्ती फेलाइ होराज ॥ अहो ॥ १९ ॥ तीनों रत्न वहू गोपी रखे जय। रखे फिर जाय खोवाइ। रहे आनन्दे सज्जन सम्बन्धे। चिन्ता दुःख विरलाइ होराज ॥ अहो ॥ २० ॥ ढाल दश पर पांच शिरोमणी। ऋषि अमोलक गाइ। श्रोता भरीये सुकृत्य खजाने। पुण्याइ काम आइ होराज ॥ अहो ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ पुनः अति आडंबर कियो। जयनी और पुरराय। भोगनी पुत्री जय भगी। शुभ लग्ने परणाय ॥ १ ॥ शतगज तुरंग सहश्रदश। दायजा में दिया राय। गाम जागीर दीया घणा। हाथ खरच के तांय ॥ २ ॥ महापुण्यात्म दम्पति। जोडी जोगी मिली आय। खामी नहीं कोई सुखकी। संचित सम फल पाय ॥ ३ ॥ नित्य नवला सुख भोगवे। दोगुंदक सुरसार। मणी पमाये सामुग्री। होवे सब तैयार ॥ ४ ॥ भोगवे लोपे अन्यने। देइ इच्छित दान।

होनहार आगे सुनो । श्रोता लगाइ ध्यान ॥ ५ ॥ ❁ ॥ ढाल १६ मी ॥ म्हारे
आज आनन्दनो दिन छेजी ॥ यह० ॥ पुण्यवन्त कुं बोल सहे नहींरे । चातुर ने
चिन्ता होवे सहीरे ॥ पुण्य ॥ १ ॥ एकदिन सजाइ उत्तम सजीरे । निकल्या फिरवा
जयजी पुरमा गजीरे ॥ पुण्य ॥ २ ॥ हय गय पायक बाजा बहूरे । शोभे राज
साहबी तम सहूरे ॥ पुण्य ॥ ३ ॥ मध्य बजारे जब सो आवी यारे । पुरजन देखण
अति लोभावी यारे ॥ पु ॥ ४ ॥ ठठ जम्यो बजार के मांयनेरे । जोवे गोरडीयां
गोखे आया नेरे ॥ पु ॥ ५ ॥ तामें नारी एक बोली जों रासभीरे । ऊंचे श्वर करी
ज्यों सुने सबीरे ॥ पु ॥ ६ ॥ क्या देखो सबी ऊपर चडीरे । अपणा राय जमाइ
ये खबर पडीरे ॥ पु ॥ ७ ॥ घर जमाइ सदाइ रहे इहांरे । किस्यो देखणो यह जावे
किहांरे ॥ पु ॥ ८ ॥ शब्द स्परर्शाए जय कानमांरे । लज्जा पाया चिन्ते नीति
मानमारे ॥ पु ॥ ६ ॥ ❁ ॥ श्लोक ॥ उत्तमा स्वगुणे ख्याता मध्यमा स्तुपितुर्गुणे ।
अधमा मातुले ख्याता स्वसुरेर धमाधमा ॥ १ ॥ ❁ ॥ ढाल ॥ यों विचार मुख

नीचो कियोरे । क्रिडा उत्सहा सब भागी गयोरे ॥ पु ॥ १० ॥ धिक मुझ
बुद्धि ने अरु रिद्धि नेरे । मैं तो गमाइ लाज काज सिद्धिनेरे ॥ पु ॥ ११ ॥ जैसा
हर्ष से गया था खेलमांरे । तैसा शोग से आया पाछा महलमांरे ॥ पु ॥ १२ ॥
एकान्त बैठा चिन्ता सागरे पड्यारे । अपमान दुःख अति तस मन नड्यारे ॥ पु
॥ १३ ॥ इहां रहणो मुझने जुगतो नहींरे । जावूं कामपुर विजय पासे सहींरे ॥
पु ॥ १४ ॥ पुनः चिन्ते तहां केमे जाइयेरे । न है राजा किम दास होय रहीयेरे
॥ पु ॥ १५ ॥ मंत्री साधी मैं भी बणुं राजीयोरे । स्वल्हाण रहुं विन लाजीयोरे ॥
पु ॥ १६ ॥ यों विचारी मंत्र संभारीयोरे । पण हृदय नाम विसारीयोरे ॥ पु ॥
१७ ॥ भूल्या प्रमादे याद आवे नहींरे । पश्चाताप अति पावे तबहींरे ॥ पु ॥ १८
॥ हाहा अनर्थ यह मैं मोटो कियोरे । महाराज दाना मंत्र भूली गयोरे ॥ पु ॥
१९ ॥ विजय विना यह तंत्र मिले नहींरे । जाणी भाइ पास अवतो सहींरे ॥ पु
॥ २० ॥ मुझ प्रमाद मुझने नीचो कर्योरे । पड्यो व्यसन वश तहथी स्वयश हर्योरे

॥ पु ॥ २१ ॥ हिवे पस्ताइ लाभ क्या लीजीयेरे । महाराजा बनू सो उपाव की-
जीयेरे ॥ पु ॥ २२ ॥ यों निश्चिन्त हुवा मनरमी ढालमांरे । अमोल आशा फले
पुण्य अल्प कालमांरे ॥ पु ॥ २३ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ रूप परावर्ती प्रथम में । देखूं
माइ प्रेम ॥ मंत्र लेइ साधन करी । पावूं इच्छित खेम ॥ १ ॥ मणी प्रभावे तत्क्षीणे
। निमंती रूप बनाय । शुभ्र वस्त्र मजीया तने । भाले तिलक लगाय ॥ २ ॥ चक्री
बन्धि पागडी । गले रुद्राक्षकी माल । कर बहुरंगी टीपणो । जानोइ गलडाल ॥
३ ॥ आकाश में उड चालीया । उतर्या कामपुर आय । मिलिया हर्षी विजयको ।
आशिरवाद सुनाय ॥ ४ ॥ प्रेम परिक्षा कारणे । करे वचन उचार । ते सुणीये
श्रोता सहू । लघु विनय आचार ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल १८ मी ॥ नणदलरा नगद-
ल ॥ यह० ॥ में जाणूं विद्यावले । तुमक्षोवंधव दोयहो, राजिन्द । तात अपमाने
नीकल्या । मार्गफल अति होयहो राजिन्दा । सुणीयो हमारी वारता ॥ ये ॥ १ ॥
वनमें वृद्ध वट के तले । रह्या सुखे निशी आयहो राजिन्द । तीन वस्तुही तुम

भणी। गत देव मतुष्ट थाय हीराजिन्द ॥ सुणी ॥ २ ॥ जेम भाइ कपट गया। सुम पाया यहां राज हो राजिन्द ॥ कहा मे कहूं मो मन्य है। गम्या वीन-के काज हीराजिन्द ॥ सुणी ॥ ३ ॥ सुणी विजय शेनके कथा। आश्चर्य अधिको थाय हीराजिन्द ॥ अहो ज्ञानी ये पूरो गुनो भाइ गुन चित आय हीराजिन्द ॥ सु ॥ ४ ॥ हृदय भरणी मे ह वम्ये। नेत्रे नीर वपाय हीराजिन्द। पूर्व अति नर-माग के। सुभ वंधव छे किणठाय होज्ञानी ॥ सु ॥ ५ ॥ कव दिन एसो ऊगसी। मिलसी पूज्य सुभ भ्रात होज्ञानी ॥ शीघ्र वतावो मुभ भणी। अति उपकार मोय थात होज्ञानी ॥ सु ॥ ६ ॥ कहे नीमीत फीकर तजो। जयसेण मदा जय माय हीराजिन्द ॥ विदग मणी के प्रशाद से। नाम कमी कछु नाय हीराजिन्द ॥ सु ॥ ७॥ सो सम्यंम लभ्या रयो। दुष्कर मिलण तुम नांय हीराजिन्द ॥ क्या करोगा तिणसे मिली। नेनन रुसो छ राय हीराजिन्द ॥ सु ॥ ८ ॥ यों सुण दिलगीर हुवा अति। कहे तम विन ५।११ गम्र हीज्ञानी ॥ सफल दिन ते जाणस्यूं। देखस्यूं वंधव मुम्म होज्ञानी ॥ सु ॥ ९ ॥

निमन्ति भणे विद्या वले। देवता को ले सहाय हो राजिन्द ॥ कहो तो बुलावुं इण जगा। तुम वन्धव चीण माग हो राजिन्द ॥ सु० ॥ १० ॥ परन्तु उनके जाये से। तुमने होवेगा दुःख हो राजिन्द ॥ कारण जेष्ट ते तुमथकी। इच्छा चारी को जासे सुख हो राजिन्द ॥ सु० ॥ ११ ॥ तुम हित भणी पहिला कहूं। जो असगुं सुख चहाय हो राजिन्द ॥ तो दोनों रहो जुजुवा। जिनसे विघन नहीं आय हो राजिन्द ॥ सु० ॥ १२ ॥ यह प्रश्न ने छोडके। अन्य पूछो सुख उपाय हो राजिन्द ॥ यों सुणकर विजय जी देव किम यों वोलो विबुधराय हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १३ ॥ मतलवी प्रीति विषे। इन वचने पड है विरोध हो ज्ञानी ॥ सत्य प्रीति जिनके मने। ताम न कीजिये वोध हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १४ ॥ यह संपति सव भाइ को। अर्पण करण ने तैयार हो ज्ञानी ॥ पण वांछे नहीं मुझ वन्धवो। निर्लोभी गुण आगार हो ज्ञानी ॥ सु० ॥ १५ ॥ जैसे तात लघु वाल को सूंखडी में भरमाइ जाय हो ज्ञानी ॥ त्यों इन राज में भोलवी। गया मुझ छिटकाय हो

मूलगे रूपे थाय ॥ वस्त्र भूषण दीपता । साक्षात इन्द्रसाय ॥ ३ ॥ मगन से उत्तर के आवीया । विजय सभा के मझार । अचंगे सहूजन थति । देख के यह चमत्कार ॥ ४ ॥ विजय पेखानी भ्रात को। आनन्द अंग न माय ॥ उमंगी आ गख्या चरण में। आंश्रुये ते धोवाय ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल ॥ १६ वी ॥ पोष दशमी दिन आनन्दकारी ॥ यह ॥ सज्जन सुपात्र मिल सुख होवे भारी ॥ ते जाने ज्ञानी के तग आतमारी ॥टेर॥ उठ कोटी रोम गया विकसारी । नेत्रमे वर्षे हर्ष का धारी । धन्य दिन घडी आज हमारी। कुशल भेट्य जेष्ट भ्रातारी ॥ सज्जन ॥ १ ॥ दोनों उत्तमासन ने बेठा बरोबर । अनिमेष रहे आपस में निहारी । जय कुमर निज वीती हकीकत । यथा उचित भाइ आगे उचारी ॥ स० ॥ २ ॥ विजय नरसी कहे राज संभालो । में तो सेवा में रहूंगा तुमारी ॥ जो जोग सो तस स्थान ही सोहे । ढील विचार न कीजे ल- गारी ॥ स० ॥ ३ ॥ जय कहे तुझ उपार्जित मुझ । योग्य नहीं लेवो नीति वि- चारी । भूल्यो मन्त्र पुनः याद करावो । येह भक्ति सादो हिये धारी ॥ स० ॥ ४ ॥

अति आग्रह कीयो राज लियो नहीं। तब राज मन्त्र दीयो तम सुनारी ॥ धारी मन्त्र भाइ कुशल पूछता। तत्क्षण उडगया गगन मझारी ॥ म० ॥ ५ ॥ भोगवती नगरी में आया। जहां महल है निज इक्ष्यारी ॥ एकान्त रही ते मन्त्र ने साधो। जैसी विधी पत्त पास से धारी ॥ म० ॥ ६ ॥ भोगवति पुरपति की सभा में। आया निमित ज्ञाता का धारी ॥ कहे नृपति से सुणो होवो सावध। वात बताऊं एक चमत्कारी ॥ म० ७ ॥ इसी वक्त तुम पाटवी कुंजर। उन्मत होवे जो मद इक धारी ॥ तो तुम वात मानो मुझ साची। आज सेही दिन सात मझारी ॥ म० ॥ ८ ॥ धारो आयुष न पूर्ण होवेगा। इसमें संशय नहीं लगारी ॥ होणहार टले नहीं टाल्यो। पुत्र दुःखो में ज्ञान लगारी ॥ म० ॥ ९ ॥ हितेच्छु हो शीघ्र आवो यहां। ले निजात्म काज सुधारी ॥ दान धर्म सुकृत्य सु करणी। करना सो करले वक्त है थारी ॥ म० ॥ १० ॥ इतने में तो सुणयो सहाय करो शीघ्र। राज मद एक कर जुलम अपारी ॥ सुणपर नीत्या वयण ज्ञानी का।

जागया ताम परम उपकारी ॥ स० ॥ ११ ॥ निश्रय में अव दिन सात में । पर
नरगे छोड जासूं ऋद्धि सारी ॥ जो कुछ करनो होवे सो करलूं । जो पर भव
गंग आवे म्हारी ॥ स० ॥ १२ ॥ निमन्त ज्ञानी को संतुष्ट कीना । तेतो गया स्व-
स्थान इक्कारी ॥ रायजी ज्ञान दया धर्म उन्नति । कीनी लीनी खरची टकारी ॥
स० ॥ १३ ॥ जयजी को बोलाके पयंपे । हिवे मुझ ऋद्धि सहू तुमारी ॥ द्रव्य सं-
भालो भजा पालो । आज्ञा मुझ देवो इन वारी ॥ स० ॥ १४ ॥ अचंभी नरमी
जयजी उचारे । अवनिन्त यह क्या आप विचारी ॥ रायजी बात प्रकाशी निम-
न्तनी । तब तिण राज ऋद्धि स्वीकारी ॥ स० ॥ १५ ॥ पुरपति तव ऋद्धि त्या-
गी । जिनेन्द्र परूपित दीक्षा धारी ॥ एकान्त स्थान आसण द्रढ स्थापी । हुवा
ध्यानस्त मेरुगिरी सारी ॥ स० ॥ १६ ॥ पदस्थ से पिण्डस्थ में पेठा । रूपस्थ ध्या-
ता रूपाती तारी ॥ गों धर्म ध्याने रमे वर्या शुक्ल । क्षपक श्रेणी चडे शीघ्रतारी
॥ स० ॥ १७ ॥ वेद कषाय कीया क्षीणमें क्षय । सयोगी केवल ज्ञानी भयारी ॥

संयोग मे । कौन नहीं हर्षांत ॥ ५ ॥ उत्सवे लाया पुर विषे । मिल दम्पति सुखी होय ॥ रहे सुख में जगजी इहां । दिये धर्म कथा सुणो लोय ॥ ६ ॥ ☉ ॥ ढाल २०'वीं ॥ दलाली लालन की ॥ यह ॥ पुण्याइ जयजीकी । सुणो २ हो भवीका चित्त लाय ॥ पुण्य ॥ टेर ॥ तिण अवसर पधारियाजी । जयपुर बाग मझार ॥ चरण करण गुण सागरूजी । मुनिवर बहु परिवार ॥ पु० ॥ १ ॥ वनपालक सज होय के जी । राज सभा में आय ॥ दी वधाइ मुनि आवीयाजी । सुणी मन अति हर्षाय ॥ पु० ॥ २ ॥ सजी साजाइ गजवाजी । ले संग सेना सज्जन ॥ वंद्या आ मुनिवर भणीजी । होवे ही बहु पुरजन ॥ पु० ॥ ३ ॥ परिषद बैठी भरायके जी । जग तारण मुनि राय । वागरयां धर्म उपदेशने जी । अहो सुणो भव्य चित्त लाय ॥ पु० ॥ ४ ॥ अनित्य असार संसार में । मिल्यो मतलबी सब परिवार ॥ छीण भंगूर शरीर यह जी । मुरझाहां किसे ही विचार ॥ पु० ॥ ५ ॥ पुण्य संचातो मिली सामग्रीये । पुण्य खूटे बिरलाय ॥ पुण्य करो सुकरणी करे तो । अजरामर

२ न जाय ॥ पु० ॥ ६ ॥ बनी वक्र में सबी बने जी । बिगड्या बने न कांय ॥ घणी २ में सुधारलो नां । फिर पस्तावो न थाय ॥ पु० ॥ ७ ॥ इत्यादिक गुरु देशनाजी । अमृत वृष्टि सम ॥ सुरजा मिथ्यात्वी जवासीया जी । मदन चंपक गइ रम ॥ पु० ॥ ८ ॥ सम्यक्त्व व्रत केइ वर्याजी । बराबरा नृपाल ॥ वंदी मुनि सब निज गृहजी । आया फिरी तत्काल ॥ पु ॥ ९ ॥ चिन्ते पुत्र मो रोग के जी । पकड्यो नहीं राज जोग ॥ जयजी महा गुण संपन जी । देवुं राज गुण जोग ॥ पु ॥ १० ॥ शीघ्र बुलाइ जय भणीजी । दरबारो ने रियाय ॥ सा कहे महा मला लटजी । करो काम सुखकार ॥ पु ॥ ११ ॥ गाणी पुत्रा मक्षान जी । कहा उपजा सो वात । जची सबी के मन विरेजी । जयजी ने गादी बेठान ॥ पु ॥ १२ ॥ जेत्रमल राजेश्वरु । कर महोत्सव दिक्षा लेय ॥ अंग एकादश सीखीया । फिर तप दुक्कर माड्यो तेय ॥ पु ॥ १३ ॥ संचित कर्म खपाय के जी । पाया केवल ज्ञान ॥ घणा भवी को तारके जी । पायापद निर्वाण ॥ पु ॥ १४ ॥ जन्म प्रमाण ते नरतणोजी ।

अयगरे करे उद्धार ॥ जेत्रमल ऋषिराज त्यां ते । पावे सुख श्रेयकार ॥ पु ॥ १५ ॥ जयपुर पति जयजी भयाजी । संभाली राज लगाम ॥ संतोष्या सब साजना जी । अर्पि युक्त जे ठाम ॥ पु ॥ १६ ॥ धर्म कामार्थ साधताजी । सुख से रहे जयराय ॥ ढाल वीस अमोलक कहेजी । पुण्यें सुख सवाय ॥ पु ॥ १७ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ जिस दिन से जय कुमरजी । तज्यो कामलता गेह । तिसदिन से पतिव्रता सम । अभिग्रह धररही तेह ॥ १ ॥ स्नान भूषण मही वस्त्र तज्या । न कियो सरस आहार ॥ एकान्त वास सयन धरा । अल्पभाषी आचार ॥ २ ॥ अक्का समजावे घणी । ते माने नलगार । मांस द्वादश वीतीया । तब सुणीया समाचार ॥ ३ ॥ जयजी जयपुर पति भया । उमंगी मिलण तेवार ॥ आका लाइ वैठाय के । शिविका में दरवार ॥ ४ ॥ वीती वात कही भूपने । सत्यवन्ती तस जाण । राखी अन्तेउरी विषे । प्रेमे पोषी भाण ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २१ वी ॥ वीसरेमति नाम जिनंदजी को ॥ यह ॥ जय विजय नृपति का पुण्य भारी ॥जय॥

२ ॥ दो देश अधिपति भया जयसेनजी । गुणवन्ती मिली तीन नारी ॥ जय ॥
॥ १ ॥ तीन सिद्धी तीन लोक में अपर बल । विलसे सुखसो सुरमारी ॥ जय ॥
॥ २ ॥ एक दिवस बन्धु याद आयो । ऋद्धि युत मिलणो हिरे जारी ॥ जय ॥
॥ ३ ॥ बहूत बिछोहा रह्या इत्ता दिन । अबतो रवां एक ठारी ॥ जय ॥ ४ ॥
आमंत्रने तब राज भेलायो । नीति रीति सब चेतारी ॥ जय ॥ ५ ॥ जोर
योग्य बन्दोबस्त सब करायो । करा‌ड सेना सज सारी ॥ जय ॥ ६ ॥ तीनों रानी
ने साथही लीनी । और ऋद्धि बहु श्रेष्ठ कारी ॥ जय ॥ ७ ॥ शुभ महूर्त प्रयाण
कयों तब । हयगय रथ दल परिवारी ॥ जय ॥ ८ ॥ प्राहुणाचारी करता मार्ग में ।
पुर २ पती घर मनवारी ॥ जय ॥ ९ ॥ सुखे २ यों मुकाम करंता । आया काम
पुर सीम मांरी ॥ जय ॥ १० ॥ समाचार ये पाया विजयजी । अनन्द पाया अ-
पारी ॥ जय ॥ ११ ॥ शीघ्र हुकम कीयो करो सजाइ । नगरी स्वर्ग सी सिणगारी
जय ॥ १२ ॥ आप सर्व परिवार संघाते । सन्मुख आया पाय चारी ॥ जय ॥

॥ १३ ॥ देख जेष्ट भाइ उमंग भराइ । जा पड्या चरणां मझारी ॥ जय ॥ १४ ॥ उठाइ जय हृदय से भीड्या । गर्क प्रेमरस गुलतारी ॥ जय ॥ १५ ॥ मेमांश्रुत कहे अचिन्त्य गया तजी । में दुःख पाया अपारी ॥ जय ॥ १६ ॥ आज कृतार्थ मुझ ने कीनो । आइ सन्मुख दयालारी ॥ जय ॥ १७ ॥ दोनों आरूढ हुवा एकही गय पर । रवी शशी सम शोभतारी ॥ जय ॥ १८ ॥ सब परीवारे चल मध्य वजारे ॥ छत्र शीश चमर ढुलारी ॥ जय ॥ १९ ॥ सहूकारां मोती गेह वधाया । सिंहासोभागणी लिया व धारी ॥ जय ॥ २० ॥ आया महल में राज सभा में । लघु जेष्ट मण दीपे दोनों वैठारी ॥ जय ॥ २१ ॥ सुखे २ दोनों रहे एक स्थाने । मणी औषध अनुज्ञा मझारी ॥ जय ॥ २२ ॥ देख भक्ति तुष्ट्या जयजी विजय पर । राज तिहूं को तस समर प्यारी ॥ जय ॥ २३ ॥ निश्चिन्त रहे सुख भोगे इच्छित । पुण्य फल सदा सुखकारी संभारी ॥ जय ॥ २४ ॥ ढाल इकीसी गाइ अमोलक । ॥ जय ॥ २५ ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ एकदा विजय रायजी । सुख सेजा के माय । सूता

निश्चिन्त पश्चिम निश। स्वप्न अचिन्त्यो आय ॥ १ ॥ जयति नयरी स्वर्ग सी। जयन्त राजा गुण धार ॥ विजया तनुजा तेहनी अतुल्य गुणागार ॥ २ ॥ सवरा मंडप तेहनो। रच्यो अजब रंग ढंग। राज राजेश्वर बहु मिल्या। धरना वरण उछरंग ॥ ३ ॥ सर्व राजा को परहरि। विजया वर्गा विजय तांय ॥ हर्ष स्यन्द तब तन भयो। तत्क्षीण जाग्रत थाय ॥ ४ ॥ तत्क्षीण उठ बैठा हुवा। आश्चर्य अति मन लाय। किहां विजया किहां जयंतीपुर; किम स्वप्न यह मुझ आय ॥५॥
॥ ढाल २२ मी ॥ न्यालदे की देशी में ॥ सुणजो कथा पुण्यशालीनी जी भाइ। पुण्य सदा सुखदाय ॥ पुण्यवन्त ने पुण्यवन्त मिले जी। जो दूर देशे ही रहाय ॥ सुण ॥ १ ॥ चिन्ते अचिन्त स्वप्न आवीयो जी कांइ। यह तो खोटो नहीं थाय ॥ जावूं भाइनी रजा लइ जी। लेवूं स्वप्न अजमाय ॥ सुण ॥ २ ॥ प्राते जणायो जय भणीजी भाइ। दी आज्ञा तत्काल ॥ मणी प्रभावे खगगति जी। गया जयन्ति चाल ॥ सुण ॥ ३ ॥ चिन्ते इण रूप में मुझवरे जी कांइ। तामे आश्चर्य

काय ॥ कूरुपी वणुं जो मुजवरे जी । तो सत्य-स्वभ जणाय ॥ सुण ॥ ४ ॥ मण। प्रभावे तव कयां जी भाइ । विरूप कुब्ज स्वरूप ॥ पूठ मोटी उर ऊपडे जी । टं-गणां तन मस्ती ऊप ॥ सुण ॥ ५ ॥ एकण पगे लंगडा वण्या जी भाइ । पेट गयो पाताल ॥ कर पग दुर्बल वाँकडा जी । चाले डगमग चाल ॥ सुण ॥ ६ ॥ चीवडी आँखों बैठी नाशीका जी कांइ । श्लेपम ताभे सडडाय ॥ दंत तीन मुख बाहीरे जी । लांवा होट हलाय ॥ सुण ॥ ७ ॥ मस्तक मूंछ ने दाढीना जी कांइ। कवरा विखर्या वाल ॥ फटे मलीन वस्त्र तन मजी जी । पडे मुख मांहि से लाल ॥ सु० ॥ ८ ॥ जेष्टीका सहाही कर विपे जी कांइ । डगमग चल्या जाय ॥ शीशु पाछे देखवा जी । हंसे आप तास हंसाय ॥ सु० ॥ ९ ॥ सवरा मंडप में पेसीया जी । हंसीया सव जन जोय ॥ सव से ऊंच आसन कियो जी । कम्बले ढांक्यो सोय ॥ सु० ॥ १० ॥ ता ऊपर विराजीया जी कांइ । मूछे देता ताव ॥ अवलो कता सव भूप को जी । जणाता परणण भाव ॥ सु० ॥ ११ ॥ हंसता लोक कहे

तेहनेजी कांइ। अहो २ रूप प्रधान। परणन् आवा पद्मणीजी। वणकर वीदराजन ॥ सु० ॥ १२ ॥ ते हट कर कहे परणस्यूं जी कांइ। निश्चय हूं विजीया तांय ॥ हंस सो सो रोसो घणार्जी। देखो अवी र्चाण मांय ॥ सु ॥ १३ ॥ राते कुलदेवी स्वप्न में जी कांइ। चेतायो विजीया तांय ॥ बरजे कूरूप कूबडा भणी जी। जो पूर्ण सुख चहाय ॥ सु ॥ १४ ॥ कुमरी रम्यो ध्यान में जी। न्हाइमजी सिणगार ॥ दासीयों वृन्दे परिवरीजी। नेपुरने भणकार ॥ सु ॥ १५ ॥ हरती मन नयन सहूतणाजी कांइ। पेठी मंडप मांय ॥ वेत्रधारणी दरसावतीजी। रूप नृप आदी सोसाय ॥ सु ॥ १६ ॥ नम ऋद्धि कीर्ती नृपों कीजी कांइ। सुणाती आगे जाय ॥ कुमरी वरे नहीं कोयनेजी। कूबडो रही चित्त ध्याय ॥ सु ॥ १७ ॥ आवे जिस नृप सन्मुखे जी कांइ। हर्ष दीये तस नूर ॥ तजीने आंगल संचरे जी। तव शोकी होवे उतरे ज्यों पूर ॥ सु० ॥ १८ ॥ ततले वीजय कुब्ज आवीया जी कांइ। वेत्र [illegible] ॥ सु० ॥ १९ ॥

थाकी खीजी हम ऊचरे जी चाइ। सवम आधिक गुणधाम ॥ वरना ता वर न ढूंनजा ...
नहि मिले ऐसो अन्य ठाम ॥ सु ॥२०॥ दासी वेष देवी केणथी जी। कुब्ज गले
डाली वरमाल ॥ ऋषि अमोले शार्थचनीजी। कांइ। भाखी यह वारवी ढाल ॥सु ॥२१॥
॥ दोहा ॥ सर्व राय अनुरक्त भये । कहे मूर्ख कन्या गेह ॥ मरोल सम महीपति
तजी । वायस भिक्षु के थयां नेह ॥१॥ पण जुगतो नहीं राय ने । देनी नीच जाति
ने वाल॥ खोशी लो कुब्ज कने थकी शीघ्र ये वरमाल॥२॥ कोपातुर वदे नरवरा ।
छोड कुब्ज वरमाल ॥ तुझ जोगी कन्या नहीं। भाग्य प्रमाणे चाल ॥३॥ कुब्ज उत्तर आपे
नहीं ।तव अति लाइ रीस । कहे-रे अर्प वरमाल शीघ्र । नहीं तो छेदां सीस ॥४॥
समता सायर झीले कुब्जजी । वदे नहीं एकवाच ॥ धैर्य से धोका टले । जरान
लागे आंच ॥५॥॥ ढाल २३ वी ॥ राघव आवीया हो ॥यह०॥ राजिन्द आवीया
हो । होकर सवही शूर ॥टेर॥ लेइकर करवाल नागी । वोले वचन विकराल ॥
अरे धीठा हीये चीठा । छोउ शीघ्र वरमाल ॥रा०॥१॥ गम्भीर वयण तव कुब्ज

पुत्री देवू किस ताथ कुब्ज न देता राय कान । ...
राय को देतां कुब्ज कोपे । करे मव संहार ॥ दिग मुढ मम होकर बैठा । सुचने
कोइ विचार ॥ रा० ॥ ११ ॥ चिन्त में मन्तोप करने । नमर्था उतर्यो विमाण ॥
तेहथी उतर एक खेचर नरमी । करजोड़ी वंदेवाण ॥ रा ॥ १२॥ श्रहो विजय नरेन्द्र
जयवन्त । वर्तो सदाही श्राप ॥ राय भूषण मोली मणी मम । वडो तेज प्रताप
॥ रा० ॥ १३॥ कुब्ज चिन्ते दान इच्छक । बोले विरूदावली कोय ॥ दान श्रापण
कर लंबायो । फिर नरमी कहे सोय ॥ रा०॥१४॥ गिरी वैताढ्य दक्षिण श्रेणि में। राय क-
न्या महारूप ॥ प्रज्ञापि विद्या आराधी। पूछे वर घर नृप ॥रा०॥१५॥ सुरी स्वरूप
रू महिमा आपकी । वरणी गुण हर्षाराय ॥ तेडवा मुझ वहां पठायो । पधारो
शीघ्र महाराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ यों विनंती बहु विध करतो । तबही ताम सचाय।
दूसरा खेचर आकर उतर्या । बोल्या विजय को बधाय ॥ रा० ॥ १७ ॥ उत्तर
श्रेणी विद्याधरनाथ की । कन्य गुण रूप अपार ॥ रोहणी सुरी ने पूछा वर निज।

आप वखगया अपार ॥ गा० ॥ १८ ॥ बोलावा में मर्चाव आयो । शीघ्र चलो रायनाथ ॥ कुब्जजी रहे मौनधारी । सब देख अति अचंभात ॥ गा० ॥ १९ ॥ यह नहीं कुब्ज छे नरेन्द्र को ॥ विजय विधान प्रसिद्ध ॥ खेचर पत युग सब चहाते । तो नर है को विध ॥ गा० ॥ २० ॥ कौन कहां का कुब्ज कथा बने । संशयी आनन्द विशाल ॥ अपि अमोल पुण्य प्रताप को ॥ कहां त्रैलोक टाल ॥ गा० ॥ ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ अवसर आलमो विजयजी । कुब्ज रूप कियो दूर ॥ पुरन्द्र सम मूल रूप रख्यो । दीप झलहल नूर ॥ १ ॥ सब नरेन्द्र आइ नम्या । अहो पुण्य कृपा निधान ॥ अजा जे गुनो हुवो माफ कर । बने रहो मेहरबान ॥ २ ॥ युग खेचर करे विनंती । शीघ्र चलो महाराय ॥ विजिया तात प्रणमी कहे । परणया विना न जवाय ॥ ३ ॥ मानी विजयजी अर्ज ते । नभचर रखे सादर ॥ परणया विजीया ठाठ से । दम्पति आदि प्रेम भर ॥ ४ ॥ परसंस्ये सब

॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २४ वीं ॥ जिह्ला की देशी में ॥ तब तहां खेचर विजय ने विमर्यां जाणी हो ॥ पुण्य फल सुखदाय ॥ तब तहां खेचर विजय ने विमर्यां जाणी हो ॥ राजिन्द ॥ आया चेतवा नमी विजय मधु वाणी हो ॥ पुण्य फल० ॥ आया चेतवा नमी वीनवे मधु वाणी हो ॥ राजिन्द ॥ १ ॥ यहां आय सुखमें लुब्धि हमने भूल्या दीशो स्वामी हो ॥ पुण्य० ॥ यहा० ॥ रा० ॥ इम सुण विजयजी चित्त में शरम अति पामी हो ॥ पुण्य० ॥ इम० ॥ २ ॥ तस साथही जावा शीघ्र ही सज्ज सो थाइ हो ॥ पुण्य० ॥ तस० ॥ रा० ॥ पत्नी स्वसुर ने योग्य वचन से समभाइ हो ॥ पुण्य० ॥ पत्नी० ॥ रा० ॥ ३ ॥ बेठ विमाने असमाने पन्थ मे चाल्या हो ॥ पुण्य० ॥ बेठ० ॥ रा० ॥ गीरी वेताड़ रूपा का पहाड निहाल्या हो ॥ पुण्य० ॥ गिरी० ॥ रा० ॥ दक्षिण श्रेणिये पचास नगर लेणी शोभे हो ॥ पुण्य० ॥ द० ॥ रा० ॥ जगती बागीचा युगल खेचर देखी लोभे हो ॥ पुण्य० ॥ ज० ॥ रा० ॥ ५ ॥ जयतीपुर जयन्त राज सभा आया हो ॥ पुण्य०

नारी अपसरा समानी हो ॥ पुराय० ॥ जय० ॥ रा० ॥ काम देव ने रति प्रीति
जोडी सी जानी हो ॥ पुराय० ॥ काम० ॥ रा० ॥ १९ ॥ और सब
ऋद्धि तेज बल कर शोभे हो ॥ पुराय ॥ और ॥ रा० ॥ ऐसे ठाठ से काम पुर
चल आया हो ॥ पुराय ॥ ऐसे ॥ रा० ॥ २० ॥ पुर बाहिर उतराया खचर संचरी-
या हो ॥ पुराय ॥ पुर० ॥ रा० ॥ लोक सब आश्चर्य भराया देखन हराया हो ॥
पुराय ॥ २१ ॥ जाणी जयजी सेना मंगल नाम सजाइ हो ॥ पुराय ॥ जाणी ॥
रा० ॥ सामें आया लीना लघु बन्धव बधाइ हो ॥ पुराय ॥ सा० ॥ रा० ॥ २२ ॥
नगरी सिणगार गोरडी गीत उचारी हो ॥ पुराय ॥ नग ॥ रा० ॥ दोनो गज
आरूढ पेस्या सब परिवारी हो ॥ पुराय ॥ दोनो ॥ रा० ॥ २३ ॥ देखी खेचर भू-
चर अति विस्मावे हो ॥ पुराय ॥ देखी ॥ रा० ॥ मोतीयों का मेह वर्षाइ राय बधा-
वे हो ॥ पुराय ॥ मोती ॥ रा० ॥ २४ ॥ आगा महल महल मांही सुखे सहू साथ
रहाइ हो ॥ पुराय ॥ आ० ॥ रा० ॥ बीती वारता भ्राता ने बीजय सुनाइ हो ॥

पुण्य ॥ वीतो० ॥ रा० ॥ २५ ॥ जष्ट की क्षेये निश्चिन्त विजय जी रहावे हो ॥
पुण्य ॥ जष्ट ॥ रा० ॥ स्वर्ग मया सुख भोग में काल वीतावे हो ॥ पुण्य ॥ स्व-
र्ग० ॥ रा० ॥ २६ ॥ जय के चार विजय के तीन है राणी हो ॥ पुण्य ॥ जय ॥
रा० ॥ पुण्य ढाल चोवीस श्रमोल गवाणी हो ॥ पुण्य ॥ पुण्य ॥ रा० ॥ २७ ॥
❀ ॥ दोहा ॥ पुण्य वृक्ष निज फल लखी । दोनों बन्धव उस वार ॥ तात से
मिलने अपंगीया । देखाने चमत्कार ॥ १ ॥ विन गुने अपमानीया । तास बतावां
फल ॥ चालो सेना ले सहू । कीजे कुल वीमल ॥ २ ॥ ता तदि सज्जन सहू ।
नया जानेगे मन मांय ॥ कुवर गया प्रलय भया । के रह्या ऋद्धि पाय ॥ ३ ॥
भूचर नभचर की सर्वा । करी सेना तैयार ॥ नभ भूमी भाग संकीर्ण कर । चले
करत जयकार ॥ ४ ॥ रस्ते आते अन्य राज में । शक्ति से मनाता आण ॥ कर-
ता सेना सामटी । सुखे २ करे मयाण ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २५ वी ॥ खडका छन्द
मे ॥ आयो सव सीस जहां आइ निज तात की । छावनी डाल तहां सहू रहीया ॥

नूरता गोगता आगता टाकरा । जापजो खबर तान आवे अर्दाया ॥ १ ॥ आ
नाथ प्रताप महा पुण्य वर्ताया नाणा । आंग हरा जय श्री राम पाव ॥ टेर ॥ शूर
ने वीर रणधीर गाणा मिलो । जार रा नाग अधिका जगाव ॥ आनार ॥ २ ॥
भागीया राजीया आया नरेन्द्र । दल बल जल गेश जगावे ॥ सुणा धमराय
अराय रोप आनि । हे कान दुष्ट मन माम आवे ॥ आ० ॥ ३ ॥ मजो मच फोज गज
चोज लड्वा तणा । खोज खावा दुष्ट आग नर ना ॥ गज रथ पालखी मद शूरा
गर्जा । शूर ज्यां गाजीया मेघ नरना ॥ आ० ॥ ४ ॥ मगल मद भया । मिणगारा
मज रया । श्याम घटा छाइ ज्यां माधव आवे ॥ गुल गुलाट गजीरव विद्युत हादा
चमक । लघ घण्टा घोर नाद थावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तुरग कुरंग ज्यां चपल पग
स्थिर नहीं । रोसाल चौफाल हणणाइ रहीया ॥ पालाण मजबूत रजपूत बैठा
मजा । शस्त्र सम्बन्ध कर मज थइया ॥ आ० ॥ ६ ॥ रथ संग्रामी मजा । झण-
णाट घरि सजा । जरी सोन पचरंग नेजा फरके ॥ गणा बैठा मांय मेंची धनुष्य

जमाय। मारे अरी जरा लार न सके ॥ आ० ॥ ७ ॥ वक्कर संगीन रंगीन नयन रोश में। झल झले असी न ली भाला कर में ॥ शूर रस में छके वके अरी जोमवो। सूर रस पूर रणतूर रमें ॥ आ० ॥ ८ ॥ यों चतुरंगी वहूजंगी सेना वनी। धर्म राजा तणी चोजे चाली ॥ आइया कटक जहां प्रतिष्ट कुमर का। रण में चौगान विशाल भाली ॥ आ० ॥ ९ ॥ रणां गण झडावीया। सड चडा-वीया। निशाण फररार्वीया दोनों राजा ॥ शस्त्र अस्त्र सजी थइ २ नाचे शूरमा। वाजे जुजाउ रणतूर वाजा ॥ आ० ॥ १० ॥ दयाल जय विजय यों देख चित्त चिन्तवे। विन काम घमशाण महा अभी थावे ॥ महा पाप संग्रही निश्चय जावे मरी। नहीं करूं यह अकृत्य भावे ॥ आ० ॥ ११ ॥ आपणी सेना को ना कही लडन की ॥ दोनों आइ आगे ऊभा जो रहीया ॥ प्रति पक्ष तेन छेडी कू वेण कहे। एक वाजू संग्राम चालूनी थइया ॥ आ० ॥ १२ ॥ धर्मराय सेन रोश कर न्हाखे शस्त्र कुमर पर ॥ औषधी महीमा कर नहीं लागे ॥ मेघ धारा ज्यों वर्षे शस्त्र

१६ ॥ चौकस करावी पावी नहीं तुम खबर । आरत धर आज तक रहेगी ॥ तुम पुण्याल मिल्या चमत्कार कर । हां दीय न समाय मइया ॥ आ० ॥ २० ॥ हृदय चम्पी दोनों गर्क भया सुख में । सपूत पेखी सब हर्ष लावे । तो खुशी मा-विच की कैसी वरणवी ॥ ढाल पचीस अमोल गावे ॥ आ० ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ शूरलता पेखी तात की । हर्ष्या दोनों कुमार ॥ चरणे पडी अर्जी करे । हम गुनेगार अपार ॥ १ ॥ नाहक सताया आपने । कर आविनय भरपूर ॥ सब अप-राध माफी करो । माविच गतिये भूर ॥ २ ॥ नृपति कहे संतोष ने । गुन्हो न हुवो लगार । उज्वाल्यो कुल माहरो । गाल्यो थारि अहंकार ॥ ३ ॥ सहु पहचानी राज पूत्र । हर्षित हुवा अपार ॥ मंगलतूर वजन लगे । परमरे सबी कुमार ॥ ४ ॥ खेचर भूचर पत भया । विद्या वलीया अपार ॥ ४ ॥ जील्या सबल सेना ने । हिंसा न कीनी लगार ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल २६ मी ॥ जीवो हो जीवो वीरा ॥ यह० ॥ हर्ष्या हो हर्ष्या सज्जन सहू घणा जी । भेटी जय विजय की रिद्धजी ॥ जीवो हो जीवो

एम्या राणीया संग लेहो । विरह दुःख कीया नाश हो ॥ ह० ॥ १४ ॥ पूत्रज हो पुत्र सपूता देखतां हो । जननी अति सुख पाय हो ॥ आशीर हो आशीरवादे तोषिया जी । हृदय सहू ने लगा यहां ॥ ह० ॥ १५ ॥ दीधा हो दीधा मेहल श्रेय रहवाजी। सहू सुख सामग्री सजाय हो॥ परिचर्या हो परिचर्या सब परिवारथी हो। दोनों रहे सुख माय हो ॥ ह० ॥ १६ ॥ जोइहो जोइ रचना कुमर की हो । श्रीमति मन मुरभाय हो॥ आखीर हो आखीर राज वीये ही हुवा हो । मुझ व्यर्थ गयो उपाय हो ॥ १७ ॥ होतव हो होतव कौण टाली सके हो । पुण्यातम सुख पाय हो ॥ यों जाणी हो यों जाणी सुस्ती रही हो । मनही मन समजाय हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ कुमरजी हो कुमरजी मणीद्र भाव थी हो । साधे इष्ट सब काम हो ॥ तोपे हो तोपे सब सज्जन भणी हो । पूरी इच्छित हाम हो ॥ ह० ॥ १६ ॥ जावे हो जावे गगने उडी करीजी । करे सहू राज संभाल हो । रहवे हो रहवे पिता की छांह में हो ।

वी पाई । शुद्ध सुरजाणो हो ॥ ला० ॥ २ ॥ वर्णा वक्र जो चेत सुधारे । सामग्री लेखे लगावे हो ॥ तो जालभ दुःख क्षण में गमाइ । अक्षयानन्द पावे हो ॥ ला ॥ ३ ॥ इत्यादि उपदेश सुर्णा । सहु सभा आनि हर्षाइ हो ॥ सम्यक्त्व व्रत यथा शक्ति आचरी । निज स्थान आइहो ॥ लावो ॥ ४ ॥ संवेग भीना धर्म राजा । कर जोडी करे अरजी हो । राज पुत्र न देइ आयुं । संयम लेवा मरजी हो ॥ ला० ॥ ५ ॥ यथा सुख करो मुनि फरमावे । धर्म में ढील न कीजो हो । वंदी गुरु नृप राज में आया । धर्म मन भीजो हो ॥ ला० ॥ ६ ॥ जय विजय जय को कहे बोलाइ । राज ये तुम संभारो हो ॥ तुम मम सुपुत्र में पायो । करूं सुधारा हो ॥ ला० ॥ ७ ॥ दोनों कहे आप पुण्य पसाये । राज सम्पत हम पाया हो ॥ यो राज देवो जयधीर ने । होवे सा चहाया हो ॥ ला० ॥ ८ ॥ तव नृप तीनों राणी बोलाइ । वैराग्य वात जणाइ हो । जन्म सुधारूं वाणी वक्र । तुम [illegible] कोइ हो ॥ ला० ॥ ९ ॥ प्रश्नोत्तर पहला हुवा नन्तर । तीनों राण्या वैरागी

हो ॥ कहे हम किमधिक क्यां रेही । आप जावो त्यागी हो ॥ ला० ॥ १० ॥ तब नृपति कहे रणधीर ने । राज संभला भाइ हो ॥ जय विजय तो पाया राज अन्य । ये तुम तांइ हो ॥ ला० ॥ ११ ॥ जयधीर कहे जयवीर पिता सम । हु तो राज न लेस्यू हो ॥ विजय बरोबर भ्रात भक्ति में । सदाही रहस्यूं हो ॥ ला० ॥ १२ ॥ सब की सला से विजय कुमर ने । जबरी से गादी बैठाया हो ॥ तातमात का दीक्षा ओत्सव । जयजी मन्डाया हो ॥ ला० ॥ १३ ॥ सब परिवारे बाग में आया । संसारी वेष तजाया हो ॥ धारी मुनि वेष लीनी दीक्षा । जग दुःख छिटकाया हो ॥ ला० ॥ १४ ॥ सब परिवार चित्त आरत धरतो । फिर कर निज गृह आया हो ॥ संभारे गुण रहता सुख में । जगरूढ महाया हो ॥ ला० ॥ १५ ॥ तीनों सती रही सतीयां मांइ । मुनि आचार्य ढिग रहा इहो ॥ प्रथम ज्ञान सीखे अति चूंपे । जे सिद्ध दाताइ हो ॥ ला० ॥ १६ ॥ नन्तर दुष्कर करणी करता । बाह्य अभ्यन्तर शुद्ध हो ॥ दृष्टि लगाइ निर्वाण पन्थे । जो दाखी बुद्धे हो ॥ ला० ॥

श्री सद्गुरुभ्यो नमः "समकितोत्सव" जयसेण विजयसेण चरित्र का सम्यक्त्व अधिकार नामक द्वितीय उत्तरार्ध खण्ड प्रारंभ ॥ दोहा ॥ प्रणमुं सिद्ध साधु चरण । सरस्वति गुरु पाय ॥ विघन हरे मङ्गल करे । द्वितीय खण्ड वरणाय ॥ १ ॥ समकित मूल धर्म वृक्ष का । व्रत शाख कीर्ति पान ॥ यश कुसुम फल मोक्ष दे । आराधे मति मान ॥ २ ॥ विजयसेण सम्यक्त्व दृढ । पाली संकट मांय ॥ गृहवासे केवल लही । पाये सुख शाश्वताय ॥ ३ ॥ ऋद्धि वृद्धि हुइ बहू । यशः सुख विस्तार ॥ प्रमाद तजो चित्त चटक धर । कथा सुणो धर्म धार ॥ ४ ॥ जय नृपति करे राज वर । विजय अनुज्ञाये रंग ॥ प्रीति पयोदक सारखी । अन्तर छे फक्त देय ॥ ५ ॥ बीता बहुत काल वृत ते । ऐसी तरह सुख पाय ॥ एकदा विजय कुमार ने । पश्चात् स्मरण आय ॥ ६ ॥ राज देइ सचीव को । मंलुब्धा यहां आय ॥ अब शीघ्र जाकर तहां । संतोषु परजा तांय ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल १ ली ॥ सेयां ये गोय डररे लगो उस दिन को ॥ यह० ॥ सुणोजी भाइ विजय चरित्र सुखकारी ॥

लेइ । काम पूरं चाल्यारी ॥ सु० ॥ १४ ॥ मुणी विजयजी अति हर्षाया । शोभा गर्व गजारी ॥ सु० ॥ १५ ॥ सन्मुख आइ भाइ वधाइ । पुर प्रवेश करारी ॥ सु० ॥ १६ ॥ एकदा स्थान गुननान प्रेम हो । रहे सुखे सेच्छाचारी ॥ सु० ॥ १७ ॥ यथा उचित काज करे उमंग । राज भोग सम्पदारी ॥ सु० ॥ १८ ॥ वात विनोदे एकदा चोजं । आगम मांहे उचारी ॥ सु० ॥ १९ ॥ निर्थक बैठा काल जाय यों । करां कछु नामनारी ॥ सु० ॥ २० ॥ ज्यों वल ऋद्धि पाइ प्रसिद्ध होवे । छटा देसां विविध प्रकारी ॥ सु० ॥ २१ ॥ दिग विजय करनं उमंगाना । करी सव फौज तैयारी ॥ सु० ॥ २२ ॥ रोहणी प्रज्ञाप्ति आदि विद्या । साधी शीघ्र आवे काम-गारी ॥ सु० ॥ २३ ॥ मणी औषधी लीनी साथे । कसर न रखी जान मारी ॥ सु० ॥२४॥ महा ऋद्धि महा शुनि महा वल संग । चले नगारा घोरारी ॥ सु० ॥२५॥ अनुक्रमे सव राय वस्य कर्ता । शाक्र से भक्ति वृत्तारी ॥ सु० ॥ २६ ॥ गंग सिन्धु मगड दोनों साध्या । वैताड्य लग मही मारी ॥ सु० ॥ २७ ॥ तृप्त्या मन दोनों

हो उर ॥ ४ ॥ अर्धवारे क्रोड हीरण तणी । माली कों वकसाय ॥ वस्त्रा भूषण तोपे तस । कीधो ताम वीदाय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २ री ॥ वन्धव बोल मानो हो ॥ यह ॥ सर्वज्ञ मुनि आगम लखी । दोनों भूप हर्षाया हो ॥ धन्य दिन है आज को । रोम २ विकसाया हो ॥ भविक समकित आराधो हो ॥ आराधे सुर तरु जिसी । आत्म कार्य साधो हो ॥ भविक ॥ १ ॥ सेना मज्जन सहू सज किया । विधी वंदन चाल्या हो ॥ पुरजन जनी बहू संघहुवा । जतना में हाल्या हो ॥ भ० ॥ २ ॥ देखी मुनि वाहण तज्या । मुख यत्ना कीनी हो । तिक्खुत्ता विधी वंदन कियो । मति गुण रंग भीनी हो ॥ भ० ॥ ३ ॥ यथा योग्य बैठा सहू । ज्ञान सुणन का रसीया हो ॥ परोपकारी मुनिवरा । बोधन तव चमीया हो ॥ भ० ॥ ४ ॥ अहो भव्यो इन आत्म ने । भव भ्रमण के मांही हो ॥ अनन्त पुद्गल परावृतीया । दुर्लभ देही पाइ हो ॥ भ० ॥ ५ ॥ उपना क्षेत्र आर्य विषे । उत्तम कुल अवतारो हो ॥ आयु दीर्घ पूरण इन्द्रिय । देही निर्विकारो हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ मिल्या निर्ग्रन्थ

हो ॥ भ० ॥ १४ ॥ ये तीन लिंग ज्यों जिन वचने, दृढ़ प्रीति धरी हो ॥ अरिहंत सिद्ध सूरी ज्ञानी । मुनि तपी संघ चागे हो ॥ भ० ॥ १५ ॥ कुल गण ने क्रियावन्त का । नित्य विनय करीजे हो ॥ त्रियोग शुद्ध जिनमति तणा । गुण हृदय धरीजे हो ॥ भ० ॥ १६ ॥ शम सम्वेग निर्वेगता । अनुकम्पा आस्ता हो ॥ यह लक्षण ने धारता । मिले सुख शाश्वता हो ॥ भ० ॥ १७ ॥ शंक कांक्षा वितिगिच्छा । पाखण्ड परसंसा हो ॥ परिचय तजे पाखण्डि का । दोष पंचहिंसा हो ॥ भ० ॥ १८ ॥ क्षमाधैर्य गुणज्ञता । धर्मी भक्ति उन्नती हो ॥ भूषण पंच धारण करे । जो नर समकिती हो ॥ भ० ॥ १९ ॥ सूत्रज्ञ बोधक वादी जय । त्रिकालज्ञ तपसी हो ॥ प्रसिद्धव्रति बुद्धवन्त कवी । प्रभावक द्विपसी हो ॥ भ० ॥ २० ॥ राजा वली गुरु न्यात ने । देव मरण संकट हो ॥ दोष लगे जो समकिते । आगार छ दंट हो ॥ भ० ॥ २१ ॥ बोलाया विन बोलाया हो । बोले धर्मी से जाइ हो ॥ दान मान वंदन नमन । छ यत्ना कराइ हो ॥ भ० ॥ २२ ॥ मूल कोट

आपणे नामे भोजन निपजाया । लादी लाय मुझ जरा न चखाया ॥ सु० ॥
२३ ॥ ये चीर खाइ कम्मर तोडाइ । दोष ने किनका स्वकर्म कमाइ ॥ सु० ॥
२४ ॥ ये दोनों ऐसी कर रह्या वातां । रखे संशय तुम जरा मन लाता ॥ सु० ॥
२५ ॥ निधान बतावे पाडो तुम तांइ । तो सत्य ये समझ जो भाइ ॥ सु० ॥
२६ ॥ पाडे गौशाला पग थी कुचरे । खोदी देखे भानु द्रव्य निसरे ॥ सु० ॥ २७ ॥
परतीत आइ सत्य वात जणाइ । भानु संतोष्या दोनों के तांइ ॥ सु० ॥ २८ ॥
दोनों तिर्यंच मिथ्यात्वछिटकाइ । मुनि बोधे सम्यक्त्व पायाइ ॥ सु० ॥ २९ ॥
और घणा जन धर्म ने धार्या । मुनि उपकार करीने पधार्या ॥ सु० ॥ ३० ॥ ढाल
तीसरी अमोलक गाइ । सत्संगति महालाभ दाताइ ॥ सु० ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥
भमर भानु दोनों मिली । कर तिर्यंच की सेव ॥ खान पान वस्त्र भूम से । पोषे
तस अहमेव ॥ १ ॥ तीर्यंच दोनों ज्ञानवन्त । पाले सम्यक्त्व शुद्ध । यथा उचित
करणी करे । धर्म में प्रेरी बुद्ध ॥ २ ॥ आयु अन्ते अणसण करी । प्रथम स्वर्ग

दरशण करवा न जवाइ । तो धर्म श्रवण केम थाइजी ॥ हे समकित सेठा रहो घर मांहे वेठा । करे अन्य मे खेटा ॥ स० ॥ ५ ॥ दोनों भाइ के दो दो लुगाइ । तागदी धर्म समझाइरे ॥ सुसंगति मे लगाडी । धर्म ज्ञान सिखाडी । करी समकित में गाडी ॥ स० ॥ ६ ॥ उन २ दोनों वाइ के दो दो सहेली । तास ते धर्म में भेली जी ॥ ते पण होगइ शाणी । सत्य जिन मार्ग को जाणी । धर्म आत्मभी जाणी ॥ स० ॥ ७ ॥ एकदा कोइ पाखण्डी आयो । भानु संग विवाद मचायो जी । तेथो कपटी पूरो ॥ जगो महंत को छुरो । करी चरचा कूरो ॥ स० ॥ ८ ॥ जिन वचने शंका भानू ने आइ । पण किसी को नहीं जणाइजी ॥ नहीं परशंसे निन्दे । नहीं वन्दे निकन्दे । मन में रख्यो सन्दे ॥ स० ॥ ६ ॥ केताक काले ते विसराइ । फिर जोग वणयो तेगो आइजी । फिर शंका भराइ ॥ यों तीन वार भराइ । गया कर्म वन्धाइ ॥ स० ॥ १० ॥ एकदा जेष्ट भानुनी नारी । ऊभी थी घर द्वारीजी ॥ तहां आइ मेतराणी । वोलावे सेठाणी । कोइ कार्य प्रेराणी

थाकणांइ । मिल्या जयजी थाइ । हुइ पकी सगाइ ॥ स० ॥ १८ ॥ श्रार सज्जन
मिल्या सब भाइ । न्यारा २ दीना बताइ जी । सुणीयां जिन वाणी । इहांगां करे
सब प्राणी । बात मेन्दी लगाणी ॥ स० ॥ १६ ॥ मति ज्ञाना वरण कम थेया ।
जाति स्मरण ज्ञान लेया जी ॥ सुणी जैनी जणाणी । अति हीये हर्षाणी । द्रढ
सम्यक्त्व ग्रहाणी ॥ स० ॥ २० ॥ श्रावक का व्रत सब श्रादरीया । शभा सोगन
बहु करीया जी ॥ ढाल चतुर्थी थाइ । ऋषि अमोलक गाइ । धर्म सदा सुखदाइ
॥ सम ॥ २१ ॥ ® ॥ दोहा ॥ श्री जिनजी रहे तहां लगे । सेवी विजय राजान ॥
तत्वार्थ धारण किया । निसंशय मतिमान ॥ १ ॥ जिनजी विचरे जिन पदे ।
नन्तर विजय राजान ॥ अमरी पडह बजावीयो । तीनों खण्ड के स्थान ॥ २ ॥
नवकार थावे जेहने ताम माफ कीयो दाण ॥ ज्ञान शाळा सहू स्थात कर । धर्मो
न्नति मंडाण ॥ ३ ॥ धर्म अर्थ काम सेवता ऊपना नन्दन तीन ॥ नन्द श्रानन्द
सुन्दर श्री । कीया धर्मार्थ प्रवीन ॥ ४ ॥ धर्म जग मंडण करो । रहे सहू सुख

सिंहासणे । बेठा करता मोही विचारतो । सुर सभा भरी ता समे । त्रय त्रीसक सामानिक अष्ट पटनार तो । आतम रक्षक तीनों परिषदा । अणिकपति प्रकीर्ण अपार तो ॥ उत्सहा आणी माधवजी । सब सुरों मे यों करे उच्चार तो ॥ सम ॥ ४ ॥ धन्य भाग्य भरत भूमी तणो । तहां रहे नर त्रिजग सिणगार तो । विजयपुर पति विजय भूपसा । परम विशुद्ध समकित पालनार तो । देव दानव नहीं छल सके । शंका कांचा घाली सके न लगार तो । जास परसंस्था जिन मुख तास हो । जो म्हारा नमस्कार तो ॥ सम ॥ ५ ॥ सब सुर नमन कियो तदा । पण एक मिथ्यात्वी सुर तस स्थान तो । धर्मी नर नी महीमा सुणी । तस मन दुख पायो असमान तो ॥ चिन्ते भोला शुचिपति । निरर्थक नर का करे गुणगान तो । सामर्थ हे कोण देव सम । जो चला देवे भूगिरी स्थान तो ॥ सम ॥ ६ ॥ तो क्या कथा मानवी तणी । पण कहूं तो अवी नहीं माने वात तो । सब हंसी करे माहेरी । करी बताउं येही साचात तो ॥ सम ॥ चलित करुं विजयराय ने ।

विजयराय सुण हर्षीया । मिलण आया पौषध शाल मभार तो ॥ सुखसाता पूछ विराजीया । ते भी सुख पूछे मधुर उचार तो ॥ लोक प्रसंस्या करे घणी । ते निजात्मने देवे धिकार तो ॥ सम ॥ ११ ॥ ज्ञान क्रिया व्यवहार शुद्ध । उपकारी गुणी नृप तस जाण तो ॥ राख्या तहां अग्रह करी । वृद्धि करण सुकृत्य धर्म ज्ञान तो ॥ आप भी आवे को अवसरे । धर्म चरचा करे करे पेछान तो ॥ युगल भक्ति थी जनघणा । मोहाया करे सेवा सन्मान तो ॥ सम ॥ १२ ॥ माया वीछल सर्वज्ञ को । तो अन्य की क्या कथा कहाय तो ॥ गुणानुरागी रीझे गुण लखी । छद्मस्ताते जेता जणाय तो ॥ पंचमी ढाल अमोलक कथी । श्रोता सुणो आगे चित्त लगाय तो । अभूत रचना रचे असुर ते । विजय निकन्दे मिथ्याकन्द तांय तो ॥ सम ॥ १३ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ विजयराय निजवस्य करण । देवते रचे उपाय ॥ शुभ रूप श्रुत केवली ढिग । रही ज्ञान धार आय ॥ १ ॥ गहन रेश शास्त्रज तणी । एकान्त नृपने बताय ॥ प्रश्नोत्तर करे रायजी । ते भी तेम्ही पूछ आय ॥२॥

रूपी काय वर्णादि युत ॥ सुणो ॥ दृष्टि न आवे गाय ॥ अहो ॥ १७ ॥ श्री जिने-
श्वर के वचन में ॥ सुणो ॥ शंका का नहीं काम ॥ अहो ॥ झूठो लवे किस कार-
णे ॥ सुणो ॥ जिन तजी सव हाम ॥ अहो ॥ १८ ॥ शंका तहां सम्यक्त्व रहे
नहीं ॥ सुणो ॥ कहा आचरांग मझार ॥ अहो ॥ जो वात कोइ नहीं जचे ॥
सुणो ॥ तो निज मति स्वामी धार ॥ अहो ॥ १९ ॥ अजाण मोल जवेरात को ॥
सु० ॥ माने जोहरी करे तेम ॥ अहो ॥ अल्पज्ञ जिनोक्त सव वात ने ॥ सुणो ॥
साची श्रद्धेही तेम ॥ अहो ॥ २० ॥ यों सुण सुर शरमावीयो ॥ श्रोता जन हो ॥
छट्टी ढाल के मांय ॥ अहो श्रोता जन हो ॥ अमोल कहे धन्य जे नरा ॥ श्रोता ॥
संवादे मिथ्या हराय ॥ अहो श्रोता जन हो ॥ २१ ॥ ❁ ॥ दोहा ॥ ज्यों महा
मयंगल मद छक्यो । सूंडा दंड प्रसङ्ग ॥ पंखंज खूता पंख ने विषे । खेची कहाडे
उतंग ॥ १ ॥ कुंजर नृप मद ज्ञाना नन्द । वीतर्क प्रचंड सूंड ॥ संशय पखंधी
ऊधर्यो । सम्यक्त्व कुसुम सुतुंड ॥ २ ॥ त्रिदश चमक्यो चित्त में । जागयो नृप

परवान ॥ शंकित कांक्षित न हवे । लियो शुद्ध मन चांन ॥ ३ ॥ परन्तु प्रत्यक्ष दरसी । जैन को विधान गान ॥ बलात् जो इण भर्णी । तोहो महारो होवे जान ॥ ४ ॥ मिथ्या वचन मुनेन्द्र को । किया विना न जवाय ॥ यो इदना फिर चित धरी ॥ बोले सो सुणो राय ॥ ५ ॥ ❋ ॥ ढाल ७ वी ॥ सर्वा पणाया भरत के माजाए ॥ विणजारा के राग मे ॥ तुम सुणाया जो राय हमारा । कौन जैन धर्म शुद्ध धारी ॥ टेर ॥ सब धारो सुर कहे मधु वाणी । धन्य तुमने जनागम रहस्य जाणीजी । जाव तुम बुद्ध को बलीहारी ॥ कौन ॥ १ ॥ जिन वचन सत्य मे श्रध्या । सुभ संशय श्राप सब मरद्याजी ॥ श्रपूर्व युक्ति जमारी ॥ कौ० ॥ २ ॥ जैन मत सत्य जग मांही । श्रन्य नहीं इण सहीजी ॥ पण कौन सामर्थ्य पालवारी ॥ कौ० ॥ ३ ॥ राय कहे चौसंघ श्रराधे । यथा शक्ति किया सब साधे जी ॥ देखो साधुजी शुद्ध श्राचारी ॥ कौ० ॥ ४ ॥ महा भतादि किया महा पाले । जिनाज्ञा प्रमाणे चालेजी । श्रन्यमत में न कोइ इस्यारी ॥ कौन ॥ ५ ॥ तब सुर

आश्चर्य पर पाले । गुम भूलों हो भार भोलीजी ॥ मन साधु कपट भन्डारी ॥
को० ॥ ६ ॥ बाल आडम्बर मे राजी । माल खाद करे देही ताजीजी । मन कि-
रिया जाणो ठगारी ॥ को० ॥ ७ ॥ रायजी कहे अरे भूंडा । ऐसा वचन म
बोलो कूडाजी । इन मे होवे अनन्त संसारी ॥ को० ॥ ८ ॥ क्यों मुनि करे कपट
किरिया । जो ज्ञान गुणा के दरियाजी ॥ लगी सुरत मुक्ति से एकतारी ॥ को०
॥ ९ ॥ आहार वस्त्र पात्र शुद्ध लेवे । निर्दोष स्थानक में रहवेजी । निकले छती
ऋद्धि छिटकारी ॥ को० ॥ १० ॥ सुर कहे लोक देखावूं छोडा । पण अन्तर मन
नहीं मोडाजी ॥ गुप्त करे अनर्थ अपारी ॥ को० ॥ ११ ॥ जो सरस ताजा माल
खावे । देही लाल कुन्दासी बनावेजी । वे कैसे होवे ब्रह्मचारी ॥ को० ॥ १२ ॥
सभवीयां को भणावे । नारीयां को धर्म सुणावेजी । यह बात लो हीये विचारी ॥
को० ॥ १३ ॥ भूपत सुण ऐसी सुरवाणी । लियो धू तारो तास पेछाणीजी । पण
मोड न जेष्ट मायांवारी ॥ को० ॥ १४ ॥ कहे पापिष्ट ऐसा मत बोले । कौन जग

में मुनिवर नोलजी छत्ती त्यागी क्या करे इन्कारी ॥ कौं० ॥ १५ ॥ संयम निर्वाह
वा तन पोंपे । केइ तपस्या कर तन शोपेजी । ज्ञानी ध्यानी वेयावच्ची उपकारी ॥
कौं० ॥ १६ ॥ खोटी दृष्टि कर नहीं देखे । नारी मात्र मा वेनकर लेखेजी । है
साधुमति सत्रा ब्रह्मचारी ॥ कौं० ॥ १७ ॥ महासतीयों केई गुणवन्ती । सूत्रार्थ
गुरु मुख सीखंतीजी । तामे आप तिरे पर तारी ॥ कौं० ॥ १८ ॥ जे श्राविका
ज्ञान गुणवन्ती । ते केइक संयम आचरन्ती जी । केइ देव सती सन्त ने मानारी
॥ कौं० ॥ २० ॥ ज्ञान में गुण वृद्धि पावे । यों जाण मुनि पढावे गुणावे जी ॥
पापी पाप धरे चित्त मझारी ॥ कौं० ॥ २१ ॥ देव कहे में भी संयम पाल्यो ।
बह्याभ्यान्तर भिन्न निहल्यो जी ॥ तहमे श्रावक भेप लीयो धारी ॥ कौं० ॥ २२ ॥
में कदापि न बोलूं झूठो । नहीं साधु पर में रुठो जी । जसी देखी तसी ऊचारी
॥ कौं० ॥ २३ ॥ जो भेला रहे सो जाणे । भोला भेदन सके पेछाणे जी । जो
राखे शुद्ध व्यवहारी ॥ कौं० ॥ २४ ॥ प्रथम परिक्षा कीजे । फिर ओलंभो सुजने

कोइ आने दो साधुताइ । दीजेजी ॥ में कर बताउं परिचारी ॥ कौ० ॥ २५ ॥ चुपचाप ऊठ महेले में देस्यूं भेद बताइजी । भूपत ते वात न धारी ॥ कौ० ॥ २६ ॥ नहीं वेम जरा मन लायाजी । ढाल सातमी अमोल उचारी ॥ कौ० ॥ २७ ॥ ❀ ॥ दुहा ॥ अमर अवलोयो ज्ञान से । नृपति मन विमल ॥ चटपटी लागी चित्त में । घालूं किस विध शल्य ॥ १ ॥ तासमें ताही विचारता । आचार्य विहार कीर्ती विख्यात ॥ देवशक्ति ता अवसरे । ताही को रूप वणात ॥ २ ॥ तपसं यम ज्ञान ध्यान में । निजात्म रहे भाय ॥३॥ करन्ता आय के । उतरे बाग के मांय ॥ चालो वंदन ऋषिवरा । श्रावक कहे सुणी हर्ष्यो विजय राजवी । कहे श्रावक मे आय । राय कहे तज वेम ॥ प्रसिद्ध यह तिण तांय ॥ ४ ॥ विन परिचा नहीं वंदाय । ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल ८ वी ॥ गफल मत रहेरे ॥ ऋषिवरा । चाले जिनेश्वर जेम ॥ जैन जति सच्च श्रद्ध लेना ॥ गह० ॥ जरा मत चलरे । मेरा जान जरामन चलरे ॥ चउरंगणी सेना सजवाइ । सत्र श्री जिन मत में दृढ रहणा ॥ जग ॥ टेर ॥

भिन्न २ भेद सुण कर । नृपादि हर्ष हीय गये भर ॥ जरा ॥ ७ ॥ केइ समकित व्रत आदरीया । केइ खन्ध नियम त्याग करीया । यों हुवा उपकार बहु परीया । सब विधी वंदी मुनि तांइ । परिषद निज स्थान सिधाइ ॥ जरा ॥ ८ ॥ विजय राय मुनी पग वन्दे । कर जोरी वंद आनन्दे । आज संचित पाप निकन्दे । आप सम सन्त दर्श पाया । अपूर्व बोधज सुणाया ॥ जरा ॥ ६ ॥ पण श्रवक वन्दे नाहीं । राजा तस धीठा जाणयाइ । मुनि पास कछु न बोल्याइ ॥ दोनों मिल चले पुर माहीं । नृप मुनिवर का मरमाइ ॥ जरा ॥ १० ॥ तब दांभिक सुर कहे राया । तुम दृष्टि राग मोहाया ॥ यह साधु बोलण में डाया । कुपत्त हृदय से छिटकाइ । विचारी देशना फरमाइ ॥ जरा ॥ ११ ॥ महारी थांरी खुशामदी कीनी । किया उत्कृष्ट कह दीनी । सुणी परिषद सबही भीनी । पण पाले तो वली हारी । वचन वीर्य मात्र नहीं तारी ॥ जरा ॥ १२ ॥ यह साधु हे बहू बोला । माहे नगारा सरीखा पोला । माने तुम सरीखा भोला । पण में मानुन जरा राइ ।

मुझे तो भरम भूत दरशाइ ॥ जग ॥ १३ ॥ नृप माखे परिचा करस्यूं । जो शुद्ध देखूंगा अन्दरस्युं । तो चरण में माथो धरस्युं । दिखने हैं सरीखे मणी और कांच । मालुम होवे लगे जब आंच ॥ जग ॥ १४ ॥ राय कहे इतनो मत तानो । जो भरे हे रतन गुण ज्ञानो । दीया है तेमा दो व्याख्यानो । वोली मे भेद मत लीजे । विशेष परिचा क्या कीजे ॥ जग ॥ १५ ॥ श्रावक कहे अमा सुस्ताओ । गुप्त राते इहां चल आओ । फिर आचार गोचार वताओ । तो मालुम सही पड़ जासी । मानो इति वात मेरी स्वामी ॥ जग ॥ १६ ॥ ऐसी वातों सुर बनाइ । आयो सो उपाश्रय मांही । नृप निज मन्दिर गयो तांई । आगे परिचा दिखावे गाइ । ढाल वसु अमोल ऋषि गाइ ॥ जग ॥ १७ ॥ दोहा ॥ जामिनी जाम जदा गाइ । सुर भूपत ढिग आय । कहे चालो अब वाग में । देखए किरिया मुनिराय ॥ १ ॥ राय कहे क्या देखिये । देखे व्याख्यान मांय । छिद्र पे ग्वते साधू के । पातक आतम भराय ॥ २ ॥ देव कहे ये ही जाल

में साधु गृही कमाय । मतलब मांगे आपनां । को जाण नहिं पाय ॥ ३ ॥ पोर-

चा करतां गुरु भणी । जो कभी लागे पाप । तो ते मुझ ने लागसी । यों जंता

चालो आप ॥ ४ ॥ यों आग्रह अति सुर करी, । बाग में लायो राय । गुरु रहो

देखाडतो । माया विमुनि अन्याय ॥ ५ ॥ ढाल ६ भी ॥ सुणो चन्दाजी ॥ यह ॥

यह० ॥ सुणो मुनिवर जी । अरजी करूं शुद्ध पालो तुम आचार ने । तुम गुण-

वन्त जी । छाजे नहीं है छोड़ो शीघ्र व्यभिचार ने ॥ टेर ॥ एक मुनिवर बैठा

अति नेठा । मोकर रहे वेश्या संग किडा । अभक्ष खावे मेवा पेडा । माग वर्णी

गया अज्ञानी जेडा ॥ सुणो ॥ १ ॥ यों देख राय आश्चर्य पायो । मन में गश

अधीको लागो । यो जुल्म किम्यो इण लगायो । हूं देखुं इण ने अभी

समझायो ॥ सु० ॥ २ ॥ भूपत साधु पास आयो । पण साधु जरा नहीं शरमायो ।

तो भी राय तस बोलायो । यो अकृत्य किम्यो तुम लगायो ॥ सु० ॥ ३ ॥ यह

काज आपने अघट तो । धर्म मान गंस हट तो । देखो मुझ कालजो फट तो ।

चतुराइ । हांरो सुगणा गेमालो श्रागो भाइ ॥ सुणो ॥ ११ ॥ धिकार कुमारी बुद्धि तांइ । धिकार दांभिक भेष गजाइ । कुकृत्य करता लाजो नाहीं ॥ धिक २ कुक जनक जनीता जाइ ॥ सुणो ॥ १२ ॥ जात पांत कुल सरमाया । वली मात तात ने लजाया । पर भव दुःख से नहीं डरपाया ॥ सुणो ॥ १३ ॥ निकलङ्क धर्म जिनेश्वर को । सो दीपावो मार्ग मुनिवर को । लजावे तस जन्म जैसो खर को । डूबो दोनों भव दुराचर को ॥ सुणो ॥ १४ ॥ अबतो जर चित्त शंकाश्रो । यह यह व्यभिचार को छिटकाश्रो । देव गुरु की शरम लावो । तो पण दोनों भव सुख पाश्रो ॥ सुणो ॥ १५ ॥ म्हारे थांरे गुरु शिष्य की सगाइ । ता लिये हित शिक्षा सुणाइ । कटु श्रोषधी ज्यों सुखदाइ । जो मानो तो सार निकले कांइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्राते गुरुजी कने हूं श्रास्यूं । सहू कर्म तुम्हारा दरसास्यूं । श्राखीर भूप यूं प्रकास्युं । कहे श्रमोल श्रादरीया सुख पास्युं ॥ सुणो ॥ १७ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ वेश्या रंगी मुनि कहे । राग म बोल कुबोल ॥ किन २

छोड़ो मत मटपट ॥ सत्य ॥ १२ ॥ तत्पर होकर निर्णय करो । छोड़ो असत्य प
गत । इत्यादि वचन कह्या घणा । जाणे राय माने सत ॥ सत्य ॥ १३ ॥ स्वधर्म
शीलणा गुण करी । राय कोपियो होय । जाणयो निन्हव तेह ने । भयो मिथ्याम-
ति सोय ॥ सत्य ॥ १४ वे परषा दोइ यंद लदा । बोल विचारी ने बोल । निन्द
म्हारा देव गुरु भणी । जाणयो वचन मे तोल ॥ सत्य ॥ १५ ॥ निर्णय कर नि-
श्चयात्म हो । अहो जैन धर्म मेय । नहीं निश्चय इण सारीखो । अन्य धर्म विश्वे
श्वय ॥ सत्य ॥ १६ ॥ कौन सामर्थ त्रिलोक में । करे मिथ्या जिन वैण नहीं तुं
श्रावक थयो । नहीं मानु थारी केण ॥ सत्य ॥ १७ ॥ रे मिथ्यात्वी कहा अहीं ।
दांभिक भेष बणाय । आयो ठगवा भोला भणी । पण मठ मावुंगा नाय ॥सत्य॥
१८ ॥ पाखण्डी संग बोलणो । मुझ जरा जुगतो नाय । शीघ्र जा यह स्थानक
तजी । जो कुशल तूं चहाय ॥ सत्य ॥ १९ ॥ कोप वचन सुणी राय का । सुर
चणयो निज मझार । तत्क्षण उठ चलतो हुवो । नहीं कियो चूंकार ॥ सत्य ॥

गामी जी ॥ यह ॥ धन्य विजय राजजी । इद समकित धारी जी ॥ टेर ॥ श्रा-
श्रर्य पाया सब यतिजी । एकणो देव स्थान ॥ श्रापस में चेतावती जी । करीये
गुण के जतन ॥ धन्य ॥ १ ॥ आते राय शभा जिंण जी । निर्मितिक एक
श्राय ॥ स्थापना ने विनती श्रधि गो । सहू की वात सुणाय ॥ धन्य ॥ २ ॥
नृपादि सुणी नो सहू जी । याणा हूं तुम हित काम ॥ भयंकर नाग देव को
स्राभी उपसर्ग होसी यह ठाम ॥ धन्य ॥ ३ ॥ तेह निवारण कारणे जी । एकही
मांणी उपाय ॥ राजा प्रजा सहू मिल करी । पूजो देवल ने नागराय ॥ धन्य ॥
॥ ४ ॥ स्थान थने निमित्तिनी जी । मिली एकही सहू वात ॥ भय पाया सब
चित्त में जी । निश्चय नव मन श्रात ॥ धन्य ॥ ५ ॥ मन्त्रीश्व सामान्त प्रजा मिली
जी । उत्तम पूजाणा सजाय ॥ पूजा करी नागराय की जी । शति श्राडम्बरे
श्राय ॥ धन्य ॥ ६ ॥ भणमी यज्ञी कर सभीजी ॥ कोप निवार जो देव ॥ संतु-
ष्टी मुझ सबै श्रापंजो । यह स्वीकारी हार सेव ॥ धन्य ॥ ७ ॥ विजय भूप श्रभी

कर्मोदय प्रासन हुयां। नहीं चाले ग.रु जतन ॥ रा० ॥ १६ ॥ शोकातुर सर्व जनछुड़। करे ढउंको विविध उपचार ॥ ओषध मंत्र मणी आदि सहू। पण असर न करे लगार ॥ रा० ॥ २० ॥ शोकातुर सर्व हो कहे। अब करनो किस्यो इलाज ॥ देव कोप्यो राय ऊपरे। करवा लागो महा अकाज ॥ राजे ॥ २१ ॥ पुनः सचीव सामन्त मिली। कहे स्वामी ने मानो राय ॥ तुम रागी जिनवेणना। तो दया न घट किम थाय ॥ रा० ॥ २२ ॥ मनुष्य मरे छे धर्मने। डूबे आपको वंश ॥ यह पातक किण सिर चडे। घर हाणीने जन हंस ॥ रा० ॥ २३ ॥ शास्त्र में जिनजी कह्याजी। छे छन्डी आगार ॥ कारण उपने कुदेव ने। करे महा श्रावक नमस्कार ॥ रा०.॥ २४ ॥ इत्यादि समजावे घणा। पण राय न माने रंच ॥ ढाल तेरे अ-मोलक कहे। राय जाणयो देव परपंच ॥ राजे ॥ २५ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ते अवसर तहां आवीयो। सकल गारुडी सिरदार ॥ साज सज्यो तिण सहू विधी। देखत चित्त दे टार ॥ १ ॥ गेरुवा वस्त्र तन सज्यो। जटा में कंगा खसोल ॥ तिलक

सुणो । करणहार करतार । करामात सब देखो सही ॥ सुणो ॥ ५ ॥ गां बहू सुणो ॥ सुणो ॥ न्हवाइ पुणे सजाय। बातों बनाय । कुंवारी कन्या बोलावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ ६ ॥ सुणो ॥ अत्तन आव्या तम तन । थर २ ते धूपशामन बेसावइ ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ नागदेव आयो अंग । गारुडी कहे देखो जगी ॥ जण लगी ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ तम गारुडी कियो सत्कार । भले पधार्या कृपा करी ॥ सुणो ॥ ७ ॥ सुणो ॥ होवो हम पर संतुष्ट । छेऊ को विष लेवो हरी ॥ नाग रायारे ॥ नाग रायारे ॥ कन्या मुखथी सुर केय । कोपातुर होइ नाग रायारे ॥ ८ ॥ सुणो भाइ हो ॥ यह राय अभीमानी अत्यन्त । अपमान अति कीयो घणो ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ मिथ्यात्वी कुदेव केय । परभा जरा हम तणो ॥ गारुडी हो ॥ ८ ॥ गारुडी हो ॥ मगरुरी हरुं राहनी ॥ गा० ॥ नहीं केहनी ॥ गारु० ॥ तेहथी बताइ चमत्कार । मगरुरी हरुं राहनी ॥ गा० ॥ ६ ॥ गारुडी हो ॥ तूं जा थारे घेर । हण दुष्टरो पत्त परिहरी ॥ गारु० ॥ गारु० ॥ नहीं मानुं थारी केण । रीस घुरी छे मांहरी ॥ गा० ॥ १० ॥ सुणो भाइ हो ॥

निरागी पद सिर धरूं ॥ गारु० ॥ १७ ॥ गारु० ॥ जे जाणे रत्न त्रयतत्व । तेतो
काँच न कदा ग्रहे ॥ गा० ॥ गा० ॥ दाख्यो मुज मन भेद । जदा कचपच पर रहे
॥ गा० ॥ १८ ॥ सुणो रायाहो ॥ गारुडी कहे विस्मय होय । हो यह हट नहीं
काम को ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ अवसर ओलखो आप। नाश न करो सुखधाम को
॥ सुणो रा० ॥ १८ ॥ सुणो रा० ॥ मत करो काय से नमन। मन से करोतो ते
जाणसे ॥ सुणो ॥ सुणो ॥ हूं समजावूंगा तास । दुःख खोसी दया आणसे ॥
सुणो रा० ॥ १६ ॥ सुणो रा० ॥ में भी जाणू जैन धर्म। संगति करी साधु तणी
॥ सुणो ॥ सुणो ॥ छ छंडी आगार । सहित सम्यक्त्व गुरु भणी ॥ सु० ॥ २० ॥
सु० ॥ अल्प दोप महा लाभ। प्रत्यक्ष तो विचारीये ॥ सुणो ॥ रहे वंश जगे सु
नाम । छ मनुष्य ऊगारीये ॥ सुणो ॥ २१ ॥ सुणो ॥ संसारी दोप पूरित । तो
इणरो लेखो कीस्यो ॥ सुणो ॥ अति ताण्या टूट जाय । क्या कहूं ज्यादा शाणा
दीस्यो ॥ २२ ॥ स्याद्वाद जिनमत । एकान्ति मिथ्यामति ॥ सुणो ॥ सुणो भाइ

मे कहाडीयें रेलो ॥ अहो ॥ धर्म कां जो जाणे मरम जो । तो किम असत्य में
निजात्म नमाडीयेंरे ॥ २ ॥ अहो ॥ जो कधी जावे प्राण जो । प्राण न खगडू हूं
कधी श्री वीतरागनीरे लो ॥ अहो ॥ देविन्द्र देव लिया मान जो । वो किम वन्दे
प्रतिमा छिंवे हीन नागनी रेलो ॥ ३ ॥ अहो ॥ अतिचार अल्प ते वहुत जो ।
मगाल करीने आत्म डुवावे आपनी रेलो ॥ अहो ॥ दया निजात्मनी होय जो ।
तोपिज परनी दया श्रेय मत आपनीरे लो ॥ ४ ॥ अहो ॥ ज्यों कंटक खुने अंग
माग जो । तिम अन्य मत पेठो अति दुःखदाइ हेरेलो ॥ अह ॥ जाणी लगावे
अतिचार जो । तास प्रायश्चित शास्त्र किमा वताइये रेलो ॥ ५ ॥ अहो ॥ जो करे
मत खण्डन जो । तेहथी अणु खण्डीत व्रति सदा भलारेलो ॥ अहो ॥ जो होवे
स्थिर रहेण समर्थ जो । तो भले राखो आपणा व्रत ने निर्मला रेलो ॥ ६ ॥
अहो ॥ जो पालन सके उत्सर्ग जो । तो ते कायर सेवे छे अपवादने रेलो ॥ अहो ॥
पाले अडग उत्सर्ग जो । तहां ने अपेक्षा करीये कहा स्याद्वादने रेलो ॥ ७ ॥

अहो ॥ वीतराग नो मत स्याद्वाद जो । न कहे ते ह मान ई माचो मही रेलो ॥
अहो ॥ पण मो ज्ञानान्तर होय जो । पार म ना स्याद्वाद त्रिकाल के नहीं रेलो
॥ ८ ॥ अहो ॥ यहां नहीं दया को पक्ष ने । यह ना पक्ष प्रमाण है ममारनो
रेलो ॥ अहो ॥ नहीं जीव उगायो कहवाय ना । मत गिनार कोनो रचा परि-
वारनो रेलो ॥ ९ ॥ अहो ॥ नारी पुत्र राज ने न जो । कहो न छोड धर्म श्रीजिन
राजनो रेलो ॥ अहो ॥ यह पाया आदि अनन्त ना । यार अनन्तो हुवा अंदे महाराजनो
रेलो ॥ १० ॥ अहो ॥ कोण किसो का धन परिवार जो । मार न मरसी स्वार्थ
सरीयां कोइनी रेलो ॥ अहो ॥ स्वार्थिया मत जाण जो । कर्म संचित संग आवे
करणी होइनी रेलो ॥ ११ ॥ अहो ॥ धर्म प्राप्ति दुर्लभ जो । मो पायो हूं महान पुण्य
ना जोगथी रेलो ॥ अहो ॥ दाति नहीं चिन्तामणी जमजो । न्हाखो ने कोण भोग
विषि भोगथी रेलो ॥ १२ ॥ अहो ॥ मत कर यह उपदेश जो । मत आसाधर में
पूजुं अन्य देव नेरेलो ॥ अहो ॥ होणहार सोही होय जो । वाछूं नहीं पुत्र नारी

ही तत्चीण । भगट्यो नभ में भाण । जाणे गिजय की अहना भचान ॥ श्रीन दिन मुलतान ॥ देखो ॥ १ ॥ मन्त्र बले जो थकी बन्धे थे । वो छूटे तत्काल ॥ नदी पूर ज्यों उलटे एकदम । ऊँभे सेनारो आयो काल ॥ देखो ॥ २ ॥ काला लीला पीला घोला । कावरा विचित्र रंग ॥ द्वी जिह्वा से झरे विष महा । अरुण नेत्र भय ढंग ॥ देखो ॥ ३ ॥ ते सर्प टोली में एक महानाग । उतंग फण पसार ॥ धीटा चीटा नृप सन्मुख हो बोले नरपर । अहो मूर्ख वे विचार ॥ देखो ॥ ४ ॥ धर्म गर्व छक उनमत होकर । करे वे भाव अरीठा । अधर्म नीडर वेश्रम ॥ नहीं जाणी इजु महागी शक्ति । जो महतां मुथ विनार के कर्म ॥ देखो ॥ ५ ॥ नहीं जाणी इजु महागी शक्ति । जो महतां मुथ विचार के कर्म ॥ देखो ॥ ६ ॥ जहृड फल ॥ जहां लग तेरे अङ्ग न व्यापी । तहांलग तूं अटल ॥ देखो ॥ ६ ॥ जहृड नर कहने सुनने में । डर नहीं धरे लगार ॥ निज पर बीते समझे तुंतही । येही है थारो विचार ॥ देखो ॥ ७ ॥ कृत्य कर्म का अति कटुक फल ॥ भोगव तूं हणनार ॥ यों कहतो नृप अंगे विठाणां । असूरत्त क्रोध मझार ॥ देखो ॥ ८ ॥

यम महार भूख्या सो सेभर्या । यहाँ सत्य कथन भगवन्त । इससे अनन्त गुणी
महा वेदन। भोगवीं वार अनन्त ॥ देखो ॥ १७ ॥ इन विचार में मन रमावे ।
तवही सुने समाचार ॥ राणी पूत्रों छूटी मृत्यु पाये । करो ले जा संस्कार
॥ देखो ॥ १८ ॥ जले थंग पर खार के जैसे । बीता नृप मन परीताप ॥
तो भी तेह अखण्ड ध्वनी से । करे नवकार को जाप ॥ देखो ॥ १९॥ ज्यों २
वेदन वृद्धि पावे । त्यों त्यों भाव निर्मल ॥ अधिक २ अस्तिक जिनजी के। वचन
में हुवे सवल ॥ देखो ॥ २० ॥ महा संकट में महा स्थिर रहे। धन्य विजय नृपाल ॥
कहे अमोल वनरी यों आत्म। यह षोडशमी ढाल ॥ देखो ॥ २१ ॥ ❀ ॥
दोहा ॥ ता समय तेही गारूडी । धुणावतो निज सीश ॥ विजयराय ढिग
आवीयो । देखतो दया जगीस ॥ १॥ त्रासित मुद्रा से कहे। अरे अब तो जरा
मान । नमन कर नाग देव ने । क्यों गमावे प्रान ॥ २ ॥ अति दुर्लभ
महा पुण्य से । अपूर्व वक्त यह पाय ॥ ले लावो दीर्घ आयु वर ।

॥ १६ ॥ उपकारी हुवा नाग देव शुभ । अशुभ कर्मों को खपाया ॥ महारा न-
ध्यां में ही भोगवूं । सुखसे यह सुखीयां थावा ॥ देखो २० ॥ यों संवेगा वीर रस
पुरित । नगन सुणी सहू विस्माया ॥ वहवा बोलो विजय सम्यक्त्वी की । अमोल
ढाल मतेर मांया ॥ देखो ॥ २१ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ यों दृढ निश्चयातम बनी ।
पद्मासन लगाय ॥ मेरु ज्यों स्थिर रहे ध्यान धर । मद्बोध करत उचार ॥ १ ॥
नाक दोग मुढ होरह्या । बोली न सके लगार । देखी प्रत्यक्ष यह चरी । असुर
अनंग्यो अपार ॥ २ ॥ देवे अवधि ज्ञान मे । तीव्र वेदन नृप तन । पण मनसा
निर्मल अति । समय २ वृधन ॥ ३ ॥ कीना उपाय डीगावने । उलट हुवे दृढ
भाव ॥ सब्दाश्वर्य मुरझा गयां । हारयां जुगारी दांव ॥ ४ ॥ पस्तावे अति मनमे ।
इन्द्र तगण अपमान ॥ निरर्थक नताया महा मत्वी ने । अहो २ विजय गुणखान
॥ ५ ॥ ॐ ॥ ढाल १८ वीं ॥ गोपीचन्द लड़का ॥ यह ॥ धन्य २ मत्र बोलो ।
दृढ धर्मी विजयराय को ॥ टेर ॥ नाहीं समय मत्र विमि विरलाइ । देव गगन में

ऊभाइ ॥ जय २ नाद करे विजयराय को । दुंदभी रह्यां बजाइजी ॥ धन्य ॥ १ ॥ पंच दिव्य तहां प्रकट करीया । सुगंधी जल वर्षाइ ॥ रत्नाभूषण वस्त्र अत्युत्तम । सोनैया ढग लगाइजी ॥ धन्य ॥ २ ॥ अनेक रूपकर विचित्र देव का । गगन में दल छवाइ ॥ विविध प्रकारे विजय गुण गावे । वाजित्र विविध बजाइजी ॥ धन्य ॥ ३ ॥ अहो २ मन्त्र अहो २ उद्दन । जे विजयराय में पाइ ॥ ते नहीं पावे धन्य स्थाने । धन्य २ विजय तात भाइजी ॥ धन्य ॥ ४ ॥ क्रोडोरूप कर क्रोडो जिह्वा से । विजय गुण न कहाही ॥ आज पवित्र होवे चरण भेटी । यों कहीं सभा में आइहो ॥ धन्य ॥ ५ ॥ महा दिव्य रूप वस्त्र भूषणधर । मुक्त मुगट पद ठाइ ॥ कर जुदन्तो क्षमो देव सुक्र । महा अपराध कीधाइजी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ करजोडी नमी सन्मुख ऊभो । मन्य चिरतन्त दर्शाइ ॥ में परसंस्या किसी कर नृप । सीमन्धर जिन सराइहो ॥ धन्य ॥ ७ ॥ प्रथम स्वर्गपति जिन वन्दन गये विजय पुष्कलावति मांइ ॥ सीमन्धर से इन्द्र प्रश्न किया । को सम्यक्त्वी भरत

मांइ हो ॥ धन्य ॥ ८ ॥ जिनजी नाम तुमारो दाख्यो । न मके देव दानव चलाइ ॥ तेहो पर मंस्या सुधर्मी सभा में । कीनी सुरपति थाइजी ॥ धन्य ॥ ६ ॥ मं मिथ्याली श्रध्यो नाहीं । जागयो अभी थानूं डीगाइ ॥ सो अभीमान धरी मं आयो । श्रावक रूप बनाइ हो ॥ धन्य ॥ १० ॥ धर्म चरचा में नहीं पराभव्या तब । साधु समुदाय बनाइ ॥ भृष्टाचार बतायो मुनि को । तो भी तुम न चल्याइजी ॥ धन्य ॥ ११ ॥ नागदेव स्वप्न में दीनो । निमित्तिक सेही बन्याइ ॥ नाग रूप धर उपसर्ग कीना । गारुडी हो आइ चलाइजी ॥ धन्य ॥ १२ ॥ इत्यादि सबू कर्तव्य महारा । तुमने सह्या पीड्याइ ॥ सब जग डीगीयो न तुम्ह मन तू डीगीयो । मेरु मरुत के सहाइजी ॥ धन्य ॥ धन्य ॥ १३ ॥ अहो सत्वाधिश धर्मी सैलो मणी । शूरवीर धीर राइ ॥ जिनेन्द्र देवेन्द्र परसंस्या से । अधिक आप पागाइजी ॥ धन्य ॥१४॥ जेती महारी शक्ति थी सवही । तुम परली अजमाइ ॥ तुम मनकी महाशक्ति थारो । महारी नचाली कांइजी ॥ धन्य ॥१५॥ सुर मे भी नर अधिक

सत्य धर । आज तुम प्रत्यक्ष देखाइ॥ प्रमाण जन्म जैन कुल धर्मने । जे जगे तुम पायाइजी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ मैं महादुष्ट कुदेव दयाहीन । जुल्म अति कीधाइ ॥ विना गुणे महा धर्मात्म ने । संताप्या कुटुम्ब महाइजी ॥ धन्य ॥ १७ ॥ पण तुम मने से काल इतना में । द्वेष जरा न लायाइ ॥ ऐसी इतना किंचित मुनि में । तो संसारी क्या कहाही हो ॥ धन्य ॥ १८ ॥ अहो नरेन्द्र धमेन्द्र कृपालु । मुझ रंक पर दया लाइ ॥ खमो २ यह सर्व गुन्हाने । अब फिर करूंगा नाहीं हो ॥ धन्य ॥ १९ ॥ करी बक्षीस क्षमा किंकर पर । दो माफी दान महाही ॥ यह उपकार न भूलूं कदापि । मेहर करो महाराइहो ॥ धन्य ॥ २० ॥ मुझ लायक चाकरी फरमाइ । पवित्र करो मुझ तांइ ॥ ढाल अष्टदश माही अमोलक । मानन्दाश्चर्य वरत्याइजी ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ संतुष्टी नृप कहे देव को । तुम अपराध न लगार ॥ म्हारा बन्ध्या भोगव्या । न करो कोइ विचार ॥ १ ॥ सुर तरु चिन्तामणी थकी । अधिक जिनेश्वर धर्म ॥ सो फल्यो मुझ हृदय विषे । इससे न

कोइ परम ॥ २ ॥ सो जानूं मैं तुम कने । और न को मुझ सहाय ॥ इतना पर जो देवो मुझ । तो मांगू एकवाय ॥ ३ ॥ देव कहे फरमाइये । आप कहो सो प्रमाण ॥ राय कहे तो छोडदो । मिथ्यामत दुःख खाण ॥ ४ ॥ स्वीकारो जैन धर्म को । करो चउतीर्थ सेव ॥ उन्नती करो धर्म सत्य की । पावो सुख सदेव ॥ ५ ॥ प्रमाण वचन यह आपका । करजोडी कहे देव ॥ मैं धार्यो जैनधर्म को । पालूंगा अहमेव ॥ ६ ॥ विजय गुरु वंदन करी । खेद हर्ष दिलधार ॥ देवगया देवलोक में ॥ पाले धर्म स्वीकार ॥ ७ ॥ ❀ ॥ ढाल १६ वी ॥ तूं महारी जरणी ॥ यह ॥ नृप सुनो गुनी लोको । मर्यार्थ सिद्ध शुद्ध ध्यान से ॥ टेर ॥ पक्खीपर्व आराधन विजय जी । पोषध शाल में आय । अष्टादश दोषण रहित शुद्ध । पोषधव्रत गृही रहाय । धर्यो ध्यान तब पिछली राते । धर्म ध्यान को ध्याय हो । तुम ॥ १ ॥ चिन्ते धिक्कार मुझ ने तांई कुच्छी सुख मझार । जाण तां ही पण छोडी न सकुं यो संसार असार । राज कुटुम्ब मे गृद्ध हुवो मैं । करणी न बने लगार हो ॥ तु-

सत्व धर । आज तुम प्रत्यक्ष देखाइ॥ प्रमाण जन्म जैन कुल धर्मने । जे जग तुम पायाइजी ॥ धन्य ॥ १६ ॥ में महादुष्ट कुदेव दयाहीन । जुल्म अति कीधाइ ॥ विना गुणे महा धर्मात्म ने । संताप्या कुटुम्ब महाइजी ॥ धन्य ॥ १७ ॥ पण तुम मने से काल इतना मे । द्वेष जरा न लायाइ ॥ एसी दृढता किंचित मुनि मे । ना संसारी क्या कहाही हो ॥ धन्य ॥ १८ ॥ अहा नरेन्द्र धर्मेन्द्र कृपालु । मुझ रंक पर दया लाइ ॥ खमो ॰ यह मेरे गुन्हाने । अब फिर करूंगा नाही हो ॥धन्य॥ १६ ॥ करी बक्षीस क्षमा किंकर पर । दो मार्फी दान महाही ॥ यह उपकार न भूलूं कदापि । मेहर करो महाराइहो ॥ धन्य ॥ २० ॥ मुझ लायक चाकरी फर-माइ । पवित्र करो मुझ तांइ ॥ ढाल अष्टदश माही अमोलक । मानन्दाश्चर्य वर त्याइजी ॥ धन्य ॥ २१ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ संतुष्टा नृप कहे देव को । तुम अपराध न लगार ॥ महारा बन्ध्या भोगव्या । न करो कांइ विचार ॥ १ ॥ सुर तरु चि-न्तामणी थकी । अधिक जिनेश्वर धर्म ॥ सो फल्यों मुझ हृदय विषे । इससे न

नर गण धाय ॥ २ ॥ थाये पोषध शाल में । विजय ऋषि नर देव । जाने सही हुवे केवली । पाये हर्ष विशेष ॥ ३ ॥ दिन कर भी तब प्रगटा । मिले सज्जन सब थाय । पुरजन आदि परिषदा । बहुत ही तहां भराय ॥ ४ ॥ जग तारन जिन रायजी । धर्म देशना फरमाय । सो सुणियो श्रोता सबी । तेजो आतम रमाय ॥ ५ ॥ ❀ ढाल २० वीं ॥ मे सुख देख्यो गोडी पारस को ॥ यह ॥ चेतो चतुर शुद्ध सम्यक्त्व धारो । धर्म मे खेवा पारजी ॥ टेर ॥ चार अंग अति दुर्लभ जगमें प्रथम नर अवतारजी ॥ चे० ॥ १ ॥ नव घाटी में अनन्त परावर्तन । किया जन्म मरण धारजी ॥ चेतो ॥ २ ॥ अनन्त पुण्ये नर हुवा । पिन सूत्र सुणवो दुष्कारजी ॥ चेतो ॥३॥ मिथ्या वाणी खोटी कहानी । सुण अनंतवारजी ॥ चेतो ॥४॥ श्रीजिनवाणी सुणके श्रद्ध । सोही सम्यक्त्व उचारजी ॥ चेतो ॥५॥ कुश्रद्धा और थोर मिथ्या शल्य सोभमा अनन्त संसार जी ॥ चेतो ॥ ६ ॥ चोथा बोल श्रद्ध के स्पर्शना । यथा शक्त्यानुसार जी ॥ चेतो ॥ ७ ॥ ज्ञान सहित चारित्र पाले

तो । हो जावे खेवा पार जी ॥ चेतो ॥ ८ ॥ क्षमा मुक्ति अज्जु ने मार्दव । ला-
घव सत्य संयम धार जी ॥ चे० ॥ ९ ॥ तप ज्ञान ब्रह्मचर्य धार तो । निश्चय खेवा
पार जी ॥ चे० ॥ १० ॥ ज्ञान दर्शन चरन त्रय रत्न यह । करे आत्म निस्तार
जी ॥ चे० ॥ ११ ॥ आत्मिक गुण तज प्रणति रमणता । मोही कलावनहार जी
॥ चे० ॥ १२ ॥ ममत्व बन्ध जो बन्ध जगतो । यो कर्म दुःखकार जी ॥ चे० ॥
१३ ॥ जो छेदे अर्गहीन मच्छ पर । तम गहला भव ठार जी ॥ चेतो० ॥ १४ ॥
यह तन अत्यन्त अशुचि का कुंडा । धर्म करे तो होवे उद्धार जी ॥ चेतो ॥ १५ ॥
असार से सार निकले सो निकाल । जो तुम हो होशार जी ॥ चे० ॥ १६ ॥
येही तन है मोक्ष को कारण । काय हेतु सो लेता धार जी ॥ चे० ॥ १७ ॥ अ-
पूर्व और महा लाभ दाता । यह अवसर श्रेयकार जी ॥ चेतो ॥ १८ ॥ अलभ्य
लाभ लभ्य हुवो लूंटो । मरणो अभी ही विचार जी ॥ चेतो ॥ १९ ॥ गइ वक्त
पुनः आवे न किमपि, खोया सोच अपार जी ॥ चेतो ॥ २० ॥ यों मत्य जाणी

चेतो भव्य प्राणी । अक्षय सुख इच्छनार जी ॥ चेतो ॥ २१ ॥ जिनाज्ञा आराधो निजात्म माणो । होवो शान्त निर्विकार जी ॥ चेतो ॥ २२ ॥ तरो तारो सब दुःख निवारो । पावो मोक्ष पद सार जी ॥ चेतो ॥ २३ ॥ इत्यादि सद्बोध दर्शायो । हाल चोमासी मझार जी ॥ चेतो ॥ २४ ॥ ऋषि अमोलक धर्म पसाये । सदा रहे जय जय कार जी ॥ चेतो ॥ २५ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ सुधासमी सुणी देशना । तृप्ति सभा शान्त रस ॥ वेराग्य उर्मि उमंगी । काढने चक्र सुन्कस ॥ १ ॥ सम्यक्त्व व्रत नियम गुण । धारे बहुत सुज्ञ जन ॥ जयसेण आदि सो परिवार के । परम संवेग दशाध्यो मन ॥ २ ॥ सहू परिषद् सांचे विशुद्ध । जिनजी को करे नमस्कार ॥ आइ थी उसी दिशी गइ । यथा शक्त धर्म धार ॥ ३ ॥ जयसेण जिनवर पास । गुणीयों को उच्चार ॥ अश्या परतीता उपदेश यह । स्फरसवा दृढ निर्धार ॥ ४ ॥ जिनजी कहे यथा सुख करो । प्रतिबन्ध करीये नाथ ॥ सुणी अति हर्षी पुनः वन्दी । निज २ सदने आय ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ढाल २१ वी ॥ गोतम

जयवति १ विजीया २ गुणवन्त जी । जतश्री ३ भागना ४ दीपन्त जी ॥ जयनि
५ कामलता ६ मोहंत जी । यां नव ही शिव पन्थ वरन्त जी ॥ श्री ॥ ४ ॥ साधु
सतियां संग परिवर्या जी । जिनराय कीयो विहार ॥ गाम सीम लग सहू मिली ।
पहोंचाइ फिरीं परिवार जी ॥ करता गुण गण प्रिती संभार जी । आया सव
निज २ आगार जी ॥ करे धर्म कर्म यथा सार जी । अव संतां सतीयां अधिकार
जी ॥ श्री ॥ ५ ॥ जिनराज एकान्त स्थानके जी । बेठा सव परिवार ॥ असे-
वना गृहणा शिक्षा विस्तारी करी उचार जी । जो ज्ञान गुणे आचार जी ॥ ते
लीनी सन्त सती धार जी । और ज्ञान पढ्या सूत्र सार जी । फिर करणी में
मड्या एकतार जी ॥ श्री ॥ ६ ॥ ज्ञानानन्दि मगन ध्यान में जी । तप तप घोर
दृढ जाप ॥ ग्राम नगरा आदि विचरता । साहता परिसहा शीत ताप जी ॥ सद्-
बोधे उपकार अमाप जी । करता तारता भव्यजन तदाप जी ॥ फेलायो धर्म
सत्य थाप जी ॥ वहूते तारे जगमे मापजी ॥ श्री ॥ ७ ॥ श्री विजय जिनराजवी

मनशिवार में । यह उत्तम रची पाप मुग । त्या मव श्रोता चतर मिलीं । पारो अरु श्रद्धा मम्यक मन्मुग्नजी । महा अपगं न होवो कलुमुखजी । तो तेमे गया सो मव दुःखजी । यह कथन मार पारो मुखजी । तो कथन श्रवन सार पुखजी ॥श्री॥ १२॥ श्री मामनपति महावीर के जी । श्राचार्य हुवे गुणधार । पूज्यलवजी ऋषि मोमजी ऋषि । पूज्य कहानजी ऋषि गिरधारजी । तारा ऋषिजी काला ऋषिजी सारजी । वसु ऋषिजी धनजी ऋषि नाथजी । महन्त पूवा ऋषिजी अणगारजी । चेन ऋषि जी गुरु आगापार जी ॥ श्री ॥ १३ ॥ तस्य किंकर अमोल ने यो । वंदिता ग्रन्थानुमार ॥ कथा पढी कथी राम में । यथामति सुधार वधार जी ॥ संक्षेप विस्तर मनानुसारजी । करता विरुध अमत्य हो उचारजी । तो मर्वज्ञ आत्म साक्षीदारजी । मिथ्या दुष्कृत मुझे वारम्वारजी ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कोविद कवीयां को अर्पण । कहूं कीजो मम सुधार ॥ नहीं कवी में कवी शीशु । नहीं बुद्धि विशुद्ध उर धारजी ॥ कीजो मर्व दोषण को निवारजी । अमार जो गुण विस्तार

सम्यक्त्वोत्सव पढ़त सुणावे । नाशन मिथ्या भरम जी ॥
ऋद्धि सिद्धि सब सुख पावे । अरि होवे नरम जी ॥ १ ॥

श्रीविजय जिनराज सूरी रही सम्यक्त्व पसाय केवल वरा ।
पुण्यात्म गुण पठन श्रवन होत शिव सुख सत्वरा ॥
अमोल ऋषि कहे कृपानाथजी । येही गुण दो सरन जो ।
जग रहो सौ संघको सदा आनन्द मङ्गल वरतजो ॥ २ ॥

[illegible] श्रीकहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के बाल ब्रह्मचारी
श्री अमोलख ऋषिजी महाराज रचित सम्यक्त्वोत्सव-जय विजय चरित्र
का [illegible] उत्तरार्ध खण्ड समाप्तम् ॥

॥ श्रीसम्यक्त्वोत्सव-जय विजय चरित्र समाप्तम् ॥